

**Test Date : 09 Jul 2022**

**Test Slot : Slot 1**

**Subject : Konkani**

**Sl. No.1**  
**QBID:1501001**

Consider the following table that embodies details about the percentage distribution of population of five states A-E on the basis of poverty line and gender. In accordance with the data in the table, answer the questions 1-5:

State-wise Distribution of Population

State	Percentage (%) of Population Below Poverty Line	Proportion of Males (M) and Females (F)	
		Below Poverty Line	Above Poverty Line
		M : F	M : F
A	35	5 : 6	6 : 7
B	25	3 : 5	4 : 5
C	24	1 : 2	2 : 3
D	19	3 : 2	5 : 3
E	15	5 : 3	3 : 2

निम्नलिखित तालिका पर ध्यान दीजिए, जिसमें गरीबी-रेखा और जेन्डर (लिंग) के आधार पर A से E तक के पाँच राज्यों की जनसंख्या के प्रतिशत वितरण के बारे में विवरण दिया गया है। इस तालिका के आंकड़ों (डेटा) के अनुसार प्रश्न 1 से 5 तक के उत्तर दीजिए:

जनसंख्या का राज्य-वार वितरण :

राज्य	गरीबी-रेखा के नीचे जनसंख्या का प्रतिशत (%)	पुरुषों (M) और महिलाओं (F) का अनुपात	
		गरीबी रेखा से नीचे	गरीबी रेखा से ऊपर
		M : F	M : F
A	35	5 : 6	6 : 7
B	25	3 : 5	4 : 5
C	24	1 : 2	2 : 3
D	19	3 : 2	5 : 3
E	15	5 : 3	3 : 2

What will be the number of females above poverty line in the state 'D', if it is known that the population of the state 'D' is 8 million?

- (1) 3 million
- (2) 2.83 million
- (3) 2.63 million
- (4) 2.43 million

राज्य - 'D' में गरीबी-रेखा से ऊपर महिलाओं की संख्या क्या होगी, यदि यह ज्ञात है कि राज्य 'D' की जनसंख्या 8 मिलियन है?

- (1) 3 मिलियन
- (2) 2.83 मिलियन
- (3) 2.63 मिलियन
- (4) 2.43 मिलियन

1[Option ID=10001]  
 2[Option ID=10002]  
 3[Option ID=10003]  
 4[Option ID=10004]

SI. No.2  
QBID:1501002

Consider the following table that embodies details about the percentage distribution of population of five states A-E on the basis of poverty line and gender. In accordance with the data in the table, answer the questions 1-5:

State-wise Distribution of Population

State	Percentage (%) of Population Below Poverty Line	Proportion of Males (M) and Females (F)	
		Below Poverty Line	Above Poverty Line
		M : F	M : F
A	35	5 : 6	6 : 7
B	25	3 : 5	4 : 5
C	24	1 : 2	2 : 3
D	19	3 : 2	5 : 3
E	15	5 : 3	3 : 2

निम्नलिखित तालिका पर ध्यान दीजिए, जिसमें गरीबी-रेखा और जेन्डर (लिंग) के आधार पर A से E तक के पाँच राज्यों की जनसंख्या के प्रतिशत वितरण के बारे में विवरण दिया गया है। इस तालिका के आंकड़ों (डेटा) के अनुसार प्रश्न 1 से 5 तक के उत्तर दीजिए:

जनसंख्या का राज्य-वार वितरण :

राज्य	गरीबी-रेखा के नीचे जनसंख्या का प्रतिशत (%)	पुरुषों (M) और महिलाओं (F) का अनुपात	
		गरीबी रेखा से नीचे	गरीबी रेखा से ऊपर
		M : F	M : F
A	35	5 : 6	6 : 7
B	25	3 : 5	4 : 5
C	24	1 : 2	2 : 3
D	19	3 : 2	5 : 3
E	15	5 : 3	3 : 2

If the male population above poverty line for state 'C' is 1.9 million, then what is the total population of state 'C'?

- (1) 6.25 million
- (2) 5.35 million
- (3) 4.85 million
- (4) 4.5 million

यदि राज्य - 'सी' की गरीबी-रेखा से ऊपर पुरुषों की जनसंख्या 1.9 मिलियन है तो राज्य - 'सी' की कुल जनसंख्या कितनी है?

- (1) 6.25 मिलियन
- (2) 5.35 मिलियन
- (3) 4.85 मिलियन
- (4) 4.5 मिलियन

1[Option ID=10005]  
2[Option ID=10006]  
3[Option ID=10007]  
4[Option ID=10008]

SI. No.3  
QBID:1501003

Consider the following table that embodies details about the percentage distribution of population of five states A-E on the basis of poverty line and gender. In accordance with the data in the table, answer the questions 1-5:

**State-wise Distribution of Population**

State	Percentage (%) of Population Below Poverty Line	Proportion of Males (M) and Females (F)	
		Below Poverty Line	Above Poverty Line
		M : F	M : F
A	35	5 : 6	6 : 7
B	25	3 : 5	4 : 5
C	24	1 : 2	2 : 3
D	19	3 : 2	5 : 3
E	15	5 : 3	3 : 2

निम्नलिखित तालिका पर ध्यान दीजिए, जिसमें गरीबी-रेखा और जेन्डर (लिंग) के आधार पर A से E तक के पाँच राज्यों की जनसंख्या के प्रतिशत वितरण के बारे में विवरण दिया गया है। इस तालिका के आंकड़ों (डेटा) के अनुसार प्रश्न 1 से 5 तक के उत्तर दीजिए:

जनसंख्या का राज्य-वार वितरण :

राज्य	गरीबी-रेखा के नीचे जनसंख्या का प्रतिशत (%)	पुरुषों (M) और महिलाओं (F) का अनुपात	
		गरीबी रेखा से नीचे	गरीबी रेखा से ऊपर
		M : F	M : F
A	35	5 : 6	6 : 7
B	25	3 : 5	4 : 5
C	24	1 : 2	2 : 3
D	19	3 : 2	5 : 3
E	15	5 : 3	3 : 2

What will be the male population above poverty line for state 'A' if the female population below poverty line for state 'A' is 2.1 million?

- (1) 2.3 million
- (2) 3.3 million
- (3) 4.4 million
- (4) 6.6 million

राज्य - 'A' की गरीबी-रेखा से ऊपर पुरुषों की जनसंख्या क्या होगी, यदि राज्य 'A' की गरीबी-रेखा से नीचे महिलाओं की जनसंख्या 2.1 मिलियन है?

- (1) 2.3 मिलियन
- (2) 3.3 मिलियन
- (3) 4.4 मिलियन
- (4) 6.6 मिलियन

- 1[Option ID=10009]
- 2[Option ID=10010]
- 3[Option ID=10011]
- 4[Option ID=10012]

Sl. No.4  
QBID:1501004

Consider the following table that embodies details about the percentage distribution of population of five states A-E on the basis of poverty line and gender. In accordance with the data in the table, answer the questions 1-5:

**State-wise Distribution of Population**

State	Percentage (%) of Population Below Poverty Line	Proportion of Males (M) and Females (F)	
		Below Poverty Line	Above Poverty Line
		M : F	M : F
A	35	5 : 6	6 : 7
B	25	3 : 5	4 : 5
C	24	1 : 2	2 : 3
D	19	3 : 2	5 : 3
E	15	5 : 3	3 : 2

निम्नलिखित तालिका पर ध्यान दीजिए, जिसमें गरीबी-रेखा और जेन्डर (लिंग) के आधार पर A से E तक के पाँच राज्यों की जनसंख्या के प्रतिशत वितरण के बारे में विवरण दिया गया है। इस तालिका के आंकड़ों (डेटा) के अनुसार प्रश्न 1 से 5 तक के उत्तर दीजिए:

जनसंख्या का राज्य-वार वितरण :

राज्य	गरीबी-रेखा के नीचे जनसंख्या का प्रतिशत (%)	पुरुषों (M) और महिलाओं (F) का अनुपात	
		गरीबी रेखा से नीचे	गरीबी रेखा से ऊपर
		M : F	M : F
A	35	5 : 6	6 : 7
B	25	3 : 5	4 : 5
C	24	1 : 2	2 : 3
D	19	3 : 2	5 : 3
E	15	5 : 3	3 : 2

If the population of males below poverty line for state 'B' is 2.4 million and that for state 'E' is 6 million, the total population of states 'B' and 'E' is in the ratio of \_\_\_\_\_.

- (1) 2 : 5
- (2) 2 : 7
- (3) 3 : 7
- (4) 4 : 9

यदि राज्य - B की गरीबी-रेखा से नीचे पुरुषों की जनसंख्या 2.4 मिलियन और राज्य - 'E' की 6 मिलियन है तो राज्य 'B' और 'E' की कुल जनसंख्या किस अनुपात में होगी?

- (1) 2 : 5
- (2) 2 : 7
- (3) 3 : 7
- (4) 4 : 9

1[Option ID=10013]  
 2[Option ID=10014]  
 3[Option ID=10015]  
 4[Option ID=10016]

Sl. No.5  
 QBID:1501005



Consider the following table that embodies details about the percentage distribution of population of five states A-E on the basis of poverty line and gender. In accordance with the data in the table, answer the questions 1-5:

**State-wise Distribution of Population**

State	Percentage (%) of Population Below Poverty Line	Proportion of Males (M) and Females (F)	
		Below Poverty Line	Above Poverty Line
		M : F	M : F
A	35	5 : 6	6 : 7
B	25	3 : 5	4 : 5
C	24	1 : 2	2 : 3
D	19	3 : 2	5 : 3
E	15	5 : 3	3 : 2

निम्नलिखित तालिका पर ध्यान दीजिए, जिसमें गरीबी-रेखा और जेन्डर (लिंग) के आधार पर A से E तक के पाँच राज्यों की जनसंख्या के प्रतिशत वितरण के बारे में विवरण दिया गया है। इस तालिका के आंकड़ों (डेटा) के अनुसार प्रश्न 1 से 5 तक के उत्तर दीजिए:

जनसंख्या का राज्य-वार वितरण :

राज्य	गरीबी-रेखा के नीचे जनसंख्या का प्रतिशत (%)	पुरुषों (M) और महिलाओं (F) का अनुपात	
		गरीबी रेखा से नीचे	गरीबी रेखा से ऊपर
		M : F	M : F
A	35	5 : 6	6 : 7
B	25	3 : 5	4 : 5
C	24	1 : 2	2 : 3
D	19	3 : 2	5 : 3
E	15	5 : 3	3 : 2

If the total population of state 'C' and state 'D' is 5 million and 7 million, respectively, then what is the difference in the population below poverty line in these two states?

- (1) 0.30 million
- (2) 0.23 million
- (3) 0.13 million
- (4) 0.11 million

यदि राज्य - 'C' और राज्य - 'D' की कुल जनसंख्या क्रमशः 5 मिलियन और 7 मिलियन है, तो इन दोनों राज्यों में गरीबी-रेखा से नीचे की जनसंख्या में अंतर क्या है?

- (1) 0.30 मिलियन
- (2) 0.23 मिलियन
- (3) 0.13 मिलियन
- (4) 0.11 मिलियन

1[Option ID=10017]  
 2[Option ID=10018]  
 3[Option ID=10019]  
 4[Option ID=10020]

Sl. No.6  
 QBID:1501006

Which of the following are correct regarding the process of learning?

- (A) Remembering the information and reproducing it in examination.
- (B) Synthesis and organisation of the old and new experiences resulting in a novel pattern
- (C) Carrying out activities which leave permanent effect on the learner.
- (D) Learning means acquisition, retention and modification of experience.
- (E) Preparing only for scoring good marks.

Choose the correct answer from the options given below :

- (1) (A), (B) and (C) only
- (2) (B), (C) and (D) only
- (3) (C), (D) and (E) only
- (4) (B), (C), (D) and (E) only

अधिगम की प्रक्रिया के संबंध में निम्नलिखित में से कौन से सही हैं?

- (A) सूचना को याद करना और उसे परीक्षा में पुनःप्रस्तुत करना
- (B) पुराने और नये अनुभवों के संश्लेषण और संगठन के परिणाम स्वरूप अभिनव पैटर्न
- (C) अधिगमकर्ता पर स्थायी प्रभाव छोड़ने वाले कार्य कलापों को आगे बढ़ाना
- (D) अधिगम का आशय अनुभव का अधिग्रहण, प्रतिधारण और परिष्करण है
- (E) केवल अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए तैयारी करना

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

- (1) केवल (A), (B) और (C)
- (2) केवल (B), (C) और (D)
- (3) केवल (C), (D) और (E)
- (4) केवल (B), (C), (D) और (E)

1[Option ID=10021]  
2[Option ID=10022]  
3[Option ID=10023]  
4[Option ID=10024]

Sl. No.7  
QBID:1501007

What is the full form of MOODLE, an open source Learning Management System (LMS)?

- (1) Modular Object Oriented Digital Learning Environment
- (2) Modular Object Oriented Dynamic Learning Environment
- (3) MOOCs Oriented Digital Learning Environment
- (4) Multiple Object Oriented Dynamic Learning Environment

मुक्त स्रोत अधिगम प्रबंधन प्रणाली (एल एम एस) मूडल (एम ओ ओ डी एल ई) का पूर्ण रूप क्या है?

- (1) मॉड्यूलर ऑब्जेक्ट ओरियन्टेड डिजिटल लर्निंग एन्वायरन्मेंट
- (2) मॉड्यूलर ऑब्जेक्ट ओरियन्टेड डायनेमिक लर्निंग एन्वायरन्मेंट
- (3) मूक्स ओरियन्टेड डिजिटल लर्निंग एन्वायरन्मेंट

(4) मल्टीपल ऑब्जेक्ट ओरियन्टेड डाइनेमिक लर्निंग एन्वायर्नमेंट

- 1[Option ID=10025]  
2[Option ID=10026]  
3[Option ID=10027]  
4[Option ID=10028]

Sl. No.8  
QBID:1501008

Given below are two statements :

Statement I : Assesment drives learning.

Statement II : No feedback is required to be given in formative assessments.

In the light of the above statements, choose the most appropriate answer from the options given below:

- (1) Both Statement I and Statement II are correct  
(2) Both Statement I and Statement II are incorrect  
(3) Statement I is correct but Statement II is incorrect  
(4) Statement I is incorrect but Statement II is correct

नीचे दो कथन दिए गए हैं :

कथन (I) : आकलन अधिगम को प्रेरित करता है।

कथन (II) : रचनात्मक आकलनों में प्रतिपुष्टि देने की आवश्यकता नहीं है।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए :

- (1) कथन I और II दोनों सही हैं।  
(2) कथन I और II दोनों गलत हैं।  
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।  
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

- 1[Option ID=10029]  
2[Option ID=10030]  
3[Option ID=10031]  
4[Option ID=10032]

Sl. No.9  
QBID:1501009

According to Dewry, education is a

- (1) Social need  
(2) Personal need  
(3) Status need  
(4) Financial need

ड्योरी के अनुसार शिक्षा है:

- (1) सामाजिक आवश्यकता  
(2) व्यक्तिगत आवश्यकता  
(3) स्थिति (स्टेटस) आवश्यकता  
(4) वित्तीय आवश्यकता

- 1[Option ID=10033]  
2[Option ID=10034]  
3[Option ID=10035]  
4[Option ID=10036]

Sl. No.10  
QBID:1501010

Pandit Madan Mohan Malaviya National Mission on Teachers and Teaching has various components. Which of the following is not a component under this scheme?

- (1) Inter University Centres of UGC
- (2) Faculty Development Centers (FDCs)
- (3) Teaching Learning Centres (TLCs)
- (4) School Of Education (SOE)

शिक्षकों एवं शिक्षण पर पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय मिशन के विभिन्न घटक हैं। निम्नलिखित में से कौन सा इस योजना का घटक नहीं है

- (1) यू जी सी के अन्तर्विश्वविद्यालय केन्द्र
- (2) फेकल्टी विकास केन्द्र (एफ डी सी)
- (3) शिक्षण अधिगम केन्द्र (टी एल सी)
- (4) शिक्षा संकाय (एस ओ ई)

1[Option ID=10037]  
2[Option ID=10038]  
3[Option ID=10039]  
4[Option ID=10040]

Sl. No.11  
QBID:1501011

Which of the following are the features of case study method?

- (A) It is appreciative
- (B) It is particularistic
- (C) It is descriptive
- (D) It is inductive
- (E) It is mechanical

Choose the most appropriate answer from the options given below :

- (1) (A), (B), (C) only
- (2) (B), (C), (D) only
- (3) (C), (D), (E) only
- (4) (A), (D), (E) only



प्रकरण (केस) अध्ययन पद्धति की विशेषताएँ निम्नलिखित में से कौन सी हैं?

- (A) यह प्रशंसनात्मक है।
- (B) यह विशिष्टतापरक है।
- (C) यह विवरणात्मक है।
- (D) यह आगमनात्मक है।
- (E) यह यांत्रिक है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त का चयन कीजिए :

- (1) केवल (A), (B), (C)
- (2) केवल (B), (C), (D)
- (3) केवल (C), (D), (E)
- (4) केवल (A), (D), (E)

1[Option ID=10041]  
2[Option ID=10042]  
3[Option ID=10043]  
4[Option ID=10044]

Sl. No.12  
QBID:1501012

Which of the following are remote data collection procedures?

- (A) Third party interview
- (B) Pop-ups
- (C) Data base e-mail
- (D) Instant messaging
- (E) Panel discussions

Choose the correct answer from the options given below :

- (1) (A), (B), (C) only
- (2) (B), (C), (D) only
- (3) (C), (D), (E) only
- (4) (A), (B), (E) only

निम्नलिखित में से दूरस्थ आँकड़ा संग्रहण की प्रक्रियाएँ कौन सी हैं?

- (A) थर्ड पार्टी इंटरव्यू (तृतीय पक्ष साक्षात्कार)
- (B) पाप-अप्स
- (C) डाटा बेस ईमेल
- (D) इंस्टैंट मैसेजिंग (तात्कालिक संदेशन)
- (E) पैनल डिस्कशन (नामिका परिचर्चा)

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

- (1) केवल (A), (B), (C)
- (2) केवल (B), (C), (D)

(3) केवल (C), (D), (E)

(4) केवल (A), (D), (E)

1[Option ID=10045]

2[Option ID=10046]

3[Option ID=10047]

4[Option ID=10048]

Sl. No.13

QBID:1501013

To perform t-test which of the following softwares can be utilized?

- (A) MS Excel
- (B) Unix
- (C) SPSS
- (D) MS Equations

Choose the most appropriate answer from the options given below :

- (1) (A) and (B) only
- (2) (B), (C) and (D) only
- (3) (A) and (C) only
- (4) (A), (C) and (D) only

टी-परीक्षण करने हेतु निम्नलिखित में से कौन सा सॉफ्टवेयर प्रयुक्त किया जा सकता है?

- (A) एम. एस. एक्सेल
- (B) यूनिक्स
- (C) एस पी एस एस
- (D) एम. एस. इक्वेशन्स

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

- (1) केवल (A) और (B)
- (2) केवल (B), (C) और (D)
- (3) केवल (A) और (C)
- (4) केवल (A), (C) और (D)

1[Option ID=10049]

2[Option ID=10050]

3[Option ID=10051]

4[Option ID=10052]

Sl. No.14

QBID:1501014

Match List I with List II

List I Types of Research	List II Research Characteristic
(A) Cohort analysis	(I) Study of a specific population as it undergoes change over time.
(B) Cultivation analysis	(II) Simultaneous analysis of two or more data tables.
(C) Factor analysis	(III) Analysis of perceptions of social world.
(D) Canonical analysis	(IV) A multivariate statistical test used for data reduction.

Choose the correct answer from the options given below :

- (1) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(IV)

- (2) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(IV), (D)-(I)  
 (3) (A)-(IV), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(III)  
 (4) (A)-(I), (B)-(III), (C)-(IV), (D)-(II)

सूची-I के साथ सूची-II का मिलान कीजिए :

सूची-I शोध के प्रकार	सूची-II शोध की विशेषताएं
(A) सहगण विश्लेषण	(I) समय के साथ बदलती हुई, एक विशेष जनसँख्या का अध्ययन
(B) कल्टीवेशन (संस्कृति) विश्लेषण	(II) दो या अधिक आँकड़ा सारणियों का साथ-साथ विश्लेषण
(C) कारक विश्लेषण	(III) सामाजिक जगत के प्रत्यक्षण का विश्लेषण
(D) प्रामाणिक विश्लेषण	(IV) आँकड़ों के लघुकरण हेतु बहुचर साँख्यिकीय परीक्षण

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

- (1) (A)-(I), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(IV)  
 (2) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(IV), (D)-(I)  
 (3) (A)-(IV), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(III)  
 (4) (A)-(I), (B)-(III), (C)-(IV), (D)-(II)

1[Option ID=10053]  
 2[Option ID=10054]  
 3[Option ID=10055]  
 4[Option ID=10056]

Sl. No.15  
 QBID:1501015

The measures of inter-coder reliability are employed in research related to

- (1) Discourse analysis  
 (2) Narrative analysis  
 (3) Path analysis  
 (4) Content analysis

इंटर-कोडर विश्वसनीयता के मानदंडों का प्रयोग निम्न से संबंधित शोध में होता है:

- (1) विमर्श विश्लेषण  
 (2) वृत्तांत विश्लेषण  
 (3) पथ विश्लेषण  
 (4) विषय-वस्तु विश्लेषण

1[Option ID=10057]  
 2[Option ID=10058]  
 3[Option ID=10059]  
 4[Option ID=10060]

Sl. No.16  
 QBID:1501016

Transforming ideas, thoughts and messages into verbal and non-verbal signs and symbols is known as

- (1) Channelisation

(2) Controlled communication

(3) Encoding

(4) Decoding

धारणाओं, विचारों और संदेशों का मौखिक एवं गैर-मौखिक प्रतीकों में रूपांतरण किस नाम से जाना जाता है ?

(1) मार्गीकरण (चैनेलाइजेशन)

(2) नियंत्रित सम्प्रेषण

(3) कूटलेखन

(4) विकूटन

1[Option ID=10061]

2[Option ID=10062]

3[Option ID=10063]

4[Option ID=10064]

Sl. No.17

QBID:1501017

Which of the following are the effects of oral communication?

(A) Fragmented information

(B) Personal connect

(C) Feed back

(D) Objectivity

(E) Absence of interpretation

Choose the correct answer from the options given below :

(1) (A) and (B) only

(2) (A), (B) and (C) only

(3) (B) and (C) only

(4) (C), (D) and (E) only

निम्नलिखित में से कौन से मौखिक सम्प्रेषण के प्रभाव हैं?

(A) खंडात्मक सूचना

(B) वैयक्तिक संबंध

(C) प्रतिपुष्टि (फीडबैक)

(D) वस्तुनिष्ठता

(E) व्याख्या का अभाव

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

(1) केवल (A) और (B)

(2) केवल (A), (B) और (C)

(3) केवल (B) और (C)

(4) केवल (C), (D) और (E)

1[Option ID=10065]

2[Option ID=10066]

3[Option ID=10067]

4[Option ID=10068]

Sl. No.18

QBID:1501018



Given below are two statements :

Statement I : The psychological obstacle in communication can be seen when the receiver fails to refer language to reality and experience.

Statement II : The stereotypes held by one also contribute to the failure of language to reflect social reality.

In the light of the above statements, choose the correct answer from the options given below:

- (1) Both Statement I and Statement II are true
- (2) Both Statement I and Statement II are false
- (3) Statement I is true but Statement II is false
- (4) Statement I is false but Statement II is true

नीचे दो कथन दिए गए हैं :

कथन (I) : सम्प्रेषण में मनोवैज्ञानिक बाधा तब देखी जा सकती है, जब ग्रहणकर्ता यथार्थ एवं अनुभव को भाषा का संदर्भ देने में विफल रहता है।

कथन (II) : किसी व्यक्ति के रूढ़ प्ररूप सामाजिक यथार्थता को प्रतिबिंबित करने में भाषा की विफलता में भी योगदान करते हैं।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

- (1) कथन I और II दोनों सत्य हैं।
- (2) कथन I और II दोनों असत्य हैं।
- (3) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है।
- (4) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है।

1[Option ID=10069]  
2[Option ID=10070]  
3[Option ID=10071]  
4[Option ID=10072]

Sl. No.19  
QBID:1501019

Identify the correct sequence of the elements of communication set by Aristotle:

- (A) Speech
- (B) Speaker
- (C) Audience
- (D) Occasion
- (E) Effect

Choose the correct answer from the options given below :

- (1) (A), (D), (B), (C), (E)
- (2) (D), (B), (A), (E), (C)
- (3) (C), (D), (A), (E), (B)
- (4) (B), (A), (D), (C), (E)

अरस्तू द्वारा निर्धारित सम्प्रेषण के तत्वों के सही क्रम की पहचान कीजिए :

- (A) भाषण
- (B) वक्ता
- (C) श्रोता
- (D) अवसर
- (E) प्रभाव

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

- (1) (A), (D), (B), (C), (E)
- (2) (D), (B), (A), (E), (C)

(3) (C), (D), (A), (E), (B)

(4) (B), (A), (D), (C), (E)

1[Option ID=10073]

2[Option ID=10074]

3[Option ID=10075]

4[Option ID=10076]

Sl. No.20

QBID:1501020

Match List I with List II :

List I	List II
Types of Communication Effects	Source of Service
(A) Instrumental	(I) Author's observation
(B) Prestige	(II) A range of special requests
(C) Reinforcement	(III) Sentimental fiction
(D) Aesthetic	(IV) Factual reports

Choose the correct answer from the options given below:

(1) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(IV), (D)-(I)

(2) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(II), (D)-(I)

(3) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(I)

(4) (A)-(I), (B)-(IV), (C)-(II), (D)-(III)

सूची I के साथ सूची II का मिलान कीजिए।

सूची I
सम्प्रेषण के प्रभाव के प्रकार
(A) सहायक
(B) प्रतिष्ठा
(C) पुनर्बलन
(D) सौंदर्यपरक

सूची II
सेवा का स्रोत
(I) लेखक का अवलोकन
(II) विशेष अनुरोधों की एक रेन्ज
(III) भावपूर्ण कथा-साहित्य
(IV) तथ्यात्मक रिपोर्टें

दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

(1) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(IV), (D)-(I)

(2) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(II), (D)-(I)

(3) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(II), (D)-(I)

(4) (A)-(I), (B)-(IV), (C)-(II), (D)-(III)

1[Option ID=10077]

2[Option ID=10078]

3[Option ID=10079]

4[Option ID=10080]

Sl. No.21

QBID:1501021

Find the wrong term in the series given below:

16, 22, 30, 45, 52, 66, .....

(1) 22

(2) 30

(3) 66

(4) 45

नीचे दी गई श्रृंखला में गलत पद का पता लगाइए?

16, 22, 30, 45, 52, 66, .....

(1) 22

(2) 30

(3) 66

(4) 45

1[Option ID=10081]

2[Option ID=10082]

3[Option ID=10083]

4[Option ID=10084]

SI. No.22

QBID:1501022

If the word EARTH be written as QPMZS in coded form, how can the word HEART be written in the same code?

(1) SPMZQ

(2) SQMPZ

(3) SPMQZ

(4) SQPMZ

यदि शब्द - EARTH को कूट रूप में QPMZS लिखा जाता है तो HEART को उसी कूट में किस प्रकार लिखा जा सकता है?

(1) SPMZQ

(2) SQMPZ

(3) SPMQZ

(4) SQPMZ

1[Option ID=10085]

2[Option ID=10086]

3[Option ID=10087]

4[Option ID=10088]

SI. No.23

QBID:1501023

Compute the value of  $\frac{(0.35)^2 - (0.03)^2}{0.19}$  upto 3 decimal places:

(1) 0.064

(2) 0.64

(3) 0.006

(4) 0.694

$\frac{(0.35)^2 - (0.03)^2}{0.19}$  के मान की दशमलव के तीन स्थानों तक गणना कीजिए।

(1) 0.064

(2) 0.64

(3) 0.006

(4) 0.694

1[Option ID=10089]

2[Option ID=10090]

3[Option ID=10091]

4[Option ID=10092]

Sl. No.24

QBID:1501024

10 chairs and 5 tables were purchased for Rs. 17,500. If the average cost of a chair is Rs.1000, What is the average cost of a table?

(1) Rs. 1,400

(2) Rs. 1,200

(3) Rs. 1,100

(4) Rs. 1,500

10 कुर्सियाँ और 5 मेजों को रु 17,500 में खरीदा गया। यदि एक कुर्सी की औसत कीमत 1000 रु है; तब एक मेज की कीमत औसत क्या है?

(1) रु. 1,400

(2) रु. 1,200

(3) रु. 1,100

(4) रु. 1,500

1[Option ID=10093]

2[Option ID=10094]

3[Option ID=10095]

4[Option ID=10096]

Sl. No.25

QBID:1501025

An Aeroplane started 30 minutes later than the scheduled time from a place 1500 km away from its destination. To reach the destination at the scheduled time the pilot needed to increase the speed by 250 km/hr. What was the speed of the Aeroplane during journey? (in km/hr).

(1) 750

(2) 1000

(3) 800

(4) 900

एक हवाई जहाज ने अपने गंतव्य से 1500 कि.मी. की दूरी पर किसी स्थान से अपने निर्धारित समय से 30 मिनट की देरी से उड़ना प्रारंभ किया। अपने गंतव्य पर निर्धारित समय से पहुँचने हेतु पायलट को गति में 250 किमी. प्रति घंटे की दर से वृद्धि करनी आवश्यक हुयी। यात्रा के दौरान हवाई जहाज की गति कितनी थी (किमी./घंटा में)?

(1) 750

(2) 1000

(3) 800

(4)



1[Option ID=10097]  
 2[Option ID=10098]  
 3[Option ID=10099]  
 4[Option ID=10100]

Sl. No.26  
 QBID:1501026

In classical square of opposition if 'No S is P' is given as false then which of the following could be immediately inferred from it?

- (A) 'Some S is not P' is true
- (B) 'All S is P' is undetermined
- (C) 'Some S is not P' is undetermined
- (D) 'Some S is P' is true
- (E) 'Some S is not P' is false

Choose the correct answer from the options given below :

- (1) (B), (D) and (E) only
- (2) (A), (B) and (D) only
- (3) (A), (D) and (E) only
- (4) (B), (C) and (D) only

वियुति के क्लासिकीय वर्ग में यदि 'कोई S, P नहीं है', असल के रूप में दिया हो तब निम्नलिखित में से इससे कौन-सा सीधे तौर पर अनुमान लगाया जा सकता है।

- (A) 'कुछ S, P नहीं है', सत्य है
- (B) 'सभी S, P है', अनिर्धारित है।
- (C) 'कुछ S, P नहीं है', अनिर्धारित है।
- (D) 'कुछ S, P है', सही है
- (E) 'कुछ S, P नहीं है', गलत है

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

- (1) केवल (B), (D) और (E)
- (2) केवल (A), (B) और (D)
- (3) केवल (A), (D) और (E)
- (4) केवल (B), (C) और (D)

1[Option ID=10101]

2[Option ID=10102]  
3[Option ID=10103]  
4[Option ID=10104]

SI. No.27  
QBID:1501027

Which Fallacy is committed in the following argument?

“Smooth Sailing is all that’s there to LIFE with ABC Insurance Policy.”

- (1) The Appeal to Emotion
- (2) The Appeal to Pity
- (3) The Appeal to Force
- (4) Irrelevant Conclusion

निम्नलिखित युक्ति में कौन-सा दोष व्याप्त है?

“ए बी सी बीमा पॉलिसी के साथ जीवन-यापन सुगम होता है”

- (1) भावना के लिए आग्रह
- (2) दया के लिए आग्रह
- (3) बल के लिए आग्रह
- (4) अप्रासंगिक निष्कर्ष

1[Option ID=10105]  
2[Option ID=10106]  
3[Option ID=10107]  
4[Option ID=10108]

SI. No.28  
QBID:1501028

Given below are two statements :

Statement I : To draw an analogy between two or more entities is to indicate one or more respects in which they are similar.

Statement II : Every analogical inference proceeds from the similarity of two or more things in one or more respects to the similarity of those things in some further respect.

In the light of the above statements, choose the most appropriate answer from the options given below:

- (1) Both Statement I and Statement II are correct
- (2) Both Statement I and Statement II are incorrect
- (3) Statement I is correct but Statement II is incorrect
- (4) Statement I is incorrect but Statement II is correct

नीचे दो कथन दिए गए हैं :

कथन (I) : दो या अधिक सत्ताओं के मध्य अनुरूपता को बनाना एक या अधिक पहलुओं में उनकी समानता की तरफ इंगित करता है।

कथन (II) : प्रत्येक सादृश्यमूलक अनुमान एक या उससे अधिक पहलुओं में दो या उससे अधिक वस्तुओं की समानता से उन वस्तुओं के किसी अतिरिक्त पहलू की समानता की ओर अग्रसर होता है।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए :

- (1) कथन I और II दोनों सही हैं।

- (2) कथन I और II दोनों गलत हैं ।  
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है ।  
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है ।

1[Option ID=10109]  
2[Option ID=10110]  
3[Option ID=10111]  
4[Option ID=10112]

Sl. No.29  
QBID:1501029

Given below are two statements :

Statement I : For the Classical Indian thinkers, inference (anumāna) means only syllogistic inference.

Statement II : Unlike Aristotelian Syllogism, anumāna involves four steps instead of three.

In the light of the above statements, choose the correct answer from the options given below:

- (1) Both Statement I and Statement II are true  
(2) Both Statement I and Statement II are false  
(3) Statement I is true but Statement II is false  
(4) Statement I is false but Statement II is true

नीचे दो कथन दिए गए हैं :

कथन (I) : क्लासिकी भारतीय चिंतको के लिए अनुमान का अर्थ केवल न्यायबद्ध अनुमान से है ।

कथन (II) : अरस्तूवादी न्यायवाक्य से विपरीत अनुमान में तीन के बजाय चार चरण शामिल होते हैं ।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

- (1) कथन I और II दोनों सत्य हैं ।  
(2) कथन I और II दोनों असत्य हैं ।  
(3) कथन I सत्य है, लेकिन कथन II असत्य है ।  
(4) कथन I असत्य है, लेकिन कथन II सत्य है ।

1[Option ID=10113]  
2[Option ID=10114]  
3[Option ID=10115]  
4[Option ID=10116]

Sl. No.30  
QBID:1501030

Which of the following means of knowledge involves positing of something for making any unit of cognition self-complete?

- (1) Comparison (Upamāna)  
(2) Postulation (Arthāpatti)  
(3) Non-Cognition (Anupalabdhi)  
(4) Verbal Testimony (Śabda)

ज्ञान के निम्नलिखित साधनों में से किस में बोध की कोई भी ईकाई की स्वपूर्णता निर्मित करने हेतु कुछ मान लेना शामिल होता है?

- (1)



उपमान

- (2) अर्थापत्ति
- (3) अनुपलब्धि
- (4) शब्द

1[Option ID=10117]  
2[Option ID=10118]  
3[Option ID=10119]  
4[Option ID=10120]

Sl. No.31  
QBID:1501031

With respect to data communication, which of the following statements is true about fibre optic cable?

- (1) Fibre optic cable carries data in pulses of light and is prone to interference.
- (2) Fibre optic cable carries data as electronic signals and is not prone to interference.
- (3) Fibre optic cable carries data as electronic signals and is prone to interference.
- (4) Fibre optic cable carries data in pulses of light and is not prone to interference.

डाटा (आँकड़ा) संचार के संदर्भ में, फाइबर ऑप्टिक केबल के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

- (1) फाइबर ऑप्टिक केबल प्रकाश स्पंद में आँकड़े ले जाता है और यह व्याघात उन्मुख है।
- (2) फाइबर ऑप्टिक केबल इलैक्ट्रॉनिक संकेतकों के रूप में आँकड़े ले जाता है और यह व्याघात उन्मुख है।
- (3) फाइबर ऑप्टिक केबल इलैक्ट्रॉनिक संकेतकों के रूप में आँकड़े ले जाता है और यह व्याघात उन्मुख है।
- (4) फाइबर ऑप्टिक केबल प्रकाश स्पंद में आँकड़े ले जाता है और यह व्याघात उन्मुख नहीं है।

1[Option ID=10121]  
2[Option ID=10122]  
3[Option ID=10123]  
4[Option ID=10124]

Sl. No.32  
QBID:1501032

Arrange the following computer memory types from fastest to slowest speed:

- (A) Hard Disk
- (B) Main Memory (RAM)
- (C) CD-ROM
- (D) CPU Registers
- (E) Cache Memory

Choose the correct answer from the options given below :

- (1) (D), (E), (A), (B), (C)
- (2) (A), (C), (B), (D), (E)
- (3) (E), (D), (B), (A), (C)
- (4) (D), (E), (B), (A), (C)



कंप्यूटर स्मृति के निम्नलिखित प्रकारों को तीव्रतम से मंदगति के क्रम में लिखिए :

- (A) हार्ड डिस्क
- (B) मुख्य स्मृति (आर ए एम)
- (C) सी डी - आर ओ एम
- (D) सी पी यू रजिस्टर
- (E) काशे स्मृति (काशे मेमोरी)

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

- (1) (D), (E), (A), (B), (C)
- (2) (A), (C), (B), (D), (E)
- (3) (E), (D), (B), (A), (C)
- (4) (D), (E), (B), (A), (C)

1[Option ID=10125]  
2[Option ID=10126]  
3[Option ID=10127]  
4[Option ID=10128]

Sl. No.33  
QBID:1501033

Which of the following statements about malware are true?

- (A) A Trojan Horse is malware disguised as legitimate software.
- (B) A Virus inserts itself into another program. It runs and spreads itself when the program is opened.
- (C) A worm is similar to a virus except that it does not need a program in order to run. It spreads by itself.

Choose the correct answer from the options given below :

- (1) (A) and (B) only
- (2) (A) and (C) only
- (3) (B) and (C) only
- (4) (A), (B) and (C)

मालवेयर के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा कथन सही है?

- (A) ट्रोजन हॉर्स एक मालवेयर है जो वैध सॉफ्टवेयर के छद्मवेश में होता है।
- (B) वाइरस किसी दूसरे प्रोग्राम में स्वयं घुस जाता है। जब प्रोग्राम खोला जाता है तो यह इसमें चलने और फैलने लगता है।
- (C) कृमि एक वायरस के समान होता है। इसमें अंतर सिर्फ यह होता है कि इसको चलने के लिए प्रोग्राम की आवश्यकता नहीं होती। यह स्वयं फैलता है।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

- (1) केवल (A) और (B)
- (2) केवल (A) और (C)
- (3) केवल (B) और (C)
- (4) केवल (A), (B) और (C)

1[Option ID=10129]  
2[Option ID=10130]  
3[Option ID=10131]  
4[Option ID=10132]

Sl. No.34  
QBID:1501034

Match List I with List II

List I (File)	List II (File Format)
(A) Video	(I) .xlsx
(B) Podcast	(II) .jpg
(C) Photograph	(III) .mp4
(D) Spreadsheet	(IV) .mp3

Choose the correct answer from the options given below :

- (1) (A)-(III), (B)-(II), (C)-(IV), (D)-(I)
- (2) (A)-(II), (B)-(IV), (C)-(III), (D)-(I)
- (3) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(II), (D)-(I)
- (4) (A)-(I), (B)-(IV), (C)-(II), (D)-(III)

सूची-I के साथ सूची-II का मिलान कीजिए :

सूची-I	सूची-II
फाइल	फाइल फॉर्मेट
(A) वीडियो	(I) .एक्सएलएसएक्स
(B) पोटकास्ट	(II) .जेपीजी
(C) फोटोग्राफ	(III) .एमपी4
(D) स्प्रेडशीट	(IV) .एमपी3

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

- (1) (A)-(III), (B)-(II), (C)-(IV), (D)-(I)
- (2) (A)-(II), (B)-(IV), (C)-(III), (D)-(I)
- (3) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(II), (D)-(I)
- (4) (A)-(I), (B)-(IV), (C)-(II), (D)-(III)

1[Option ID=10133]  
2[Option ID=10134]  
3[Option ID=10135]  
4[Option ID=10136]

Sl. No.35  
QBID:1501035

In the following spreadsheet, which of the formulae below would be best for cell C2? Note that the formula must be able to be copied down from C2 to both C3 and C4.

	A	B	C
1	Lunch Cost (Rs.)	Dinner Cost (Rs.)	Total Cost (Rs.)
2	15	27	42
3	23	35	58
4	10	35	45

- (1) = A\$2 + \$B2
- (2) = \$A\$2 + B2
- (3) = \$A\$2 + \$B\$2
- (4) = \$A2 + \$B2

निम्नलिखित विस्तार शीट (स्प्रेडशीट) में, निम्नलिखित में कौन-सा सूत्र (फॉर्मूला) सेल सी 2 के लिए सर्वोत्तम रहेगा ? नोट करें कि फॉर्मूला, सी 2 से सी 3 और सी 4 दोनों में कॉपी हो सके।

	ए	बी	सी
1	मध्यान्ह भोजन लागत (रु.)	रात्रि भोजन लागत (रु.)	कुल लागत (रु.)
2	15	27	42
3	23	35	58
4	10	35	45

(1) = ए\$2 + \$बी\$2

(2) = \$ए\$2 + बी\$2

(3) = \$ए\$2 + \$बी\$2

(4) = \$ए2 + \$बी\$2

1[Option ID=10137]  
2[Option ID=10138]  
3[Option ID=10139]  
4[Option ID=10140]

Sl. No.36  
QBID:1501036

Given below are two statements : One is labelled as Assertion (A) and the other is labelled as Reason (R) :

Assertion (A) : Soil Pollution due to detergents affects the root growth of the plants and depresses the growth of soil micro-organisms.

Reason (R) : Presence of detergents in soil makes the soil more acidic.

In the light of the above statements, choose the most appropriate answer from the options given below :

- (1) Both (A) and (R) are correct and (R) is the correct explanation of (A)
- (2) Both (A) and (R) are correct but (R) is NOT the correct explanation of (A)
- (3) (A) is correct but (R) is not correct
- (4) (A) is not correct but (R) is correct



नीचे दो कथन दिए गए हैं : एक अभिकथन (Assertion A) के रूप में लिखित है तो दूसरा उसके कारण (Reason R) के रूप में :

अभिकथन (A) : अपमार्जकों (डिटर्जेंट) के कारण हुए मृदा प्रदूषण से पौधों के मूल विकास पर प्रभाव पड़ता है और मृदा की सूक्ष्म जीवों के विकास को भी कम कर देता है।

कारण (R) : मृदा में डिटर्जेंट की उपस्थिति मृदा को अधिक अम्लीय बना देता है।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए :

- (1) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
- (2) (A) और (R) दोनों सही हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
- (3) (A) सही है, लेकिन (R) सही नहीं है।
- (4) (A) सही नहीं है, लेकिन (R) सही है।

1[Option ID=10141]  
2[Option ID=10142]  
3[Option ID=10143]  
4[Option ID=10144]

Sl. No.37  
QBID:1501037

Examples of Persistent Organic Pollutants (POPs) are:

- (A) Dioxins
- (B) PAN
- (C) VOC
- (D) FURANS
- (E) PCB

Choose the correct answer from the options given below :

- (1) (A), (D), (E) only
- (2) (A), (B), (D) only
- (3) (B), (C), (E) only
- (4) (C), (D), (E) only

सतत जैव प्रदूषकों (POPs) के उदाहरण हैं :

- (A) डायोक्सिन्स
- (B) पीएन (PAN)
- (C) वी ओ सी (VOC)
- (D) फ्यूरांस
- (E) पी सी बी

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

- (1) केवल (A), (D), (E)
- (2) केवल (A), (B), (D)
- (3) केवल (B), (C), (E)
- (4) केवल (C), (D), (E)

1[Option ID=10145]  
2[Option ID=10146]  
3[Option ID=10147]  
4[Option ID=10148]

Sl. No.38  
QBID:1501038

In the first commitment period of Kyoto Protocol, how many green house gases were covered for reducing their emissions?

- (1) 4
- (2) 5
- (3) 6
- (4) 7

क्योटो प्रोटोकॉल की प्रथम प्रतिबद्धता अवधि में कितने ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के लिए आवरित किया गया था ?

- (1) 4
- (2) 5
- (3) 6
- (4) 7

1[Option ID=10149]  
2[Option ID=10150]  
3[Option ID=10151]  
4[Option ID=10152]

Sl. No.39  
QBID:1501039

Given below are two statements : One is labelled as Assertion (A) and the other is labelled as Reason (R) :

Assertion (A) : Green hydrogen production will be critical for world community to achieve carbon neutrality by the year 2050.

Reason (R) : The energy content of hydrogen gas is much higher than that of coal.

In the light of the above statements, choose the correct answer from the options given below :

- (1) Both (A) and (R) are true and (R) is the correct explanation of (A)
- (2) Both (A) and (R) are true but (R) is NOT the correct explanation of (A)
- (3) (A) is true but (R) is false
- (4) (A) is false but (R) is true

नीचे दो कथन दिए गए हैं : एक अभिकथन (Assertion A) के रूप में लिखित है तो दूसरा उसके कारण (Reason R) के रूप में :

अभिकथन (A) : विश्व समुदाय के लिए 2050 तक कार्बन निरपेक्षता प्राप्त करने हेतु हरित हाइड्रोजन का उत्पादन निर्णायक होगा।

कारण (R) : हाइड्रोजन गैस की ऊर्जा मात्रा कोयले की अपेक्षा बहुत अधिक होती है।

उपरोक्त कथन के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

- (1) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
- (2) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
- (3) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य नहीं है।
- (4) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

1[Option ID=10153]  
2[Option ID=10154]  
3[Option ID=10155]  
4[Option ID=10156]

SI. No.40  
QBID:1501040

Since the start of industrial revolution, the acidity of ocean's surface water has

- (1) increased by ~10%
- (2) remained constant
- (3) decreased by ~25%
- (4) increased by ~30%

औद्योगिक क्रांति की शुरुआत से समुद्र के सतही जल की अम्लता-

- (1) ~10% बढ़ गयी है
- (2) यथावत है
- (3) ~25% कम हो गयी है
- (4)

~30% बढ़ गयी है

- 1[Option ID=10157]
- 2[Option ID=10158]
- 3[Option ID=10159]
- 4[Option ID=10160]

SI. No.41  
QBID:1501041

A Government University with Institute of Eminence status can have foreign faculty upto a maximum of

- (1) 20% of total faculty strength
- (2) 25% of total faculty strength
- (3) 30% of total faculty strength
- (4) 35% of total faculty strength

लब्ध प्रतिष्ठित संस्थान की स्थिति प्राप्त शासकीय विश्वविद्यालय में अधिकतम कितने विदेशी शिक्षक रखे जा सकते हैं?

- (1) कुल शिक्षकों की संख्या का 20%
- (2) कुल शिक्षकों की संख्या का 25%
- (3) कुल शिक्षकों की संख्या का 30%
- (4) कुल शिक्षकों की संख्या का 35%

- 1[Option ID=10161]
- 2[Option ID=10162]
- 3[Option ID=10163]
- 4[Option ID=10164]

SI. No.42  
QBID:1501042

Credits earned by a student and stored in Academic Bank of Credit, after the date of earning such credits, will have validity upto a maximum of

- (1) 7 years
- (2) 10 years
- (3) 12 years
- (4) 15 years

किसी छात्र द्वारा अर्जित और अकादमिक क्रेडिट बैंक में जमा क्रेडिट, प्राप्त करने की तिथि के पश्चात, अधिकतम कब तक के लिये वैध होंगे?

- (1) 7 वर्षों के लिए
- (2) 10 वर्षों के लिए
- (3) 12 वर्षों के लिए
- (4) 15 वर्षों के लिए

- 1[Option ID=10165]
- 2[Option ID=10166]
- 3[Option ID=10167]
- 4[Option ID=10168]

SI. No.43  
QBID:1501043



Identify the statutory bodies of a University:

- (A) Board of studies
- (B) Academic Council
- (C) Executive Council
- (D) Finance Committee
- (E) University Court

Choose the correct answer from the options given below :

- (1) (A), (B), (C), (D) only
- (2) (A), (C) only
- (3) (A), (C), (E) only
- (4) (B), (C), (D), (E) only

विश्वविद्यालय के सांविधिक निकायों को चिन्हित कीजिए :

- (A) अध्ययन मंडल
- (B) शैक्षिक परिषद
- (C) कार्यकारी परिषद
- (D) वित्त समिति
- (E) विश्वविद्यालय कोर्ट



नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :

- (1) केवल (A), (B), (C), (D)
- (2) केवल (A), (C)
- (3) केवल (A), (C), (E)
- (4) केवल (B), (C), (D), (E)

1[Option ID=10169]  
2[Option ID=10170]  
3[Option ID=10171]  
4[Option ID=10172]

Sl. No.44  
QBID:1501044

Environmental education must be integral to all academic programmes as students need to be mainly sensitized about

- (1) its interdisciplinary and multidisciplinary nature
- (2) its emergence as a specialized field
- (3) relationship between culture and environment

(4) environmental degradation and its consequences for life on earth

पर्यावरणी शिक्षा आवश्यक रूप से सभी शैक्षिक कार्यक्रमों का अनिवार्य अंग होना चाहिए जिससे छात्रों को निम्न के बारे में मुख्यतः जागरूक बनाया जा सके:

- (1) इसकी अंतर्विषयी और बहुविषयी प्रकृति
- (2) इसका विशेष क्षेत्र के रूप में आविर्भाव
- (3) संस्कृति और पर्यावरण के मध्य संबंध
- (4) पर्यावरणी निम्नीकरण और पृथ्वी पर जीवन के लिए इसका परिणाम

1[Option ID=10173]  
2[Option ID=10174]  
3[Option ID=10175]  
4[Option ID=10176]

Sl. No.45  
QBID:1501045

'How could a lamp, which does not keep on burning, light another lamp?' This statement is from the book titled 'Siksha (learning). Who among the following is the author of this book?

- (1) Rabindranath Tagore
- (2) Sarvapalli Radhakrishnan
- (3) Jyoti Phule
- (4) Savitribai Phule

'कोई दीपक जब स्वयं नहीं जल रहा है, किसी अन्य दीपक को कैसे जला सकता है?' यह कथन शिक्षा (सीखना) शीर्षक पुस्तक से है। निम्नलिखित में से इस पुस्तक के लेखक कौन हैं?

- (1) रबीन्द्रनाथ टैगार
- (2) सर्वपल्ली राधाकृष्णन
- (3) ज्योतिबा फुले
- (4) सावित्री बाई फुले

1[Option ID=10177]  
2[Option ID=10178]  
3[Option ID=10179]  
4[Option ID=10180]

Sl. No.46  
QBID:1501046



Read the following passage and answer the questions :

An essential function of hegemony involves convincing people to support the existence of a social system that does not support them in return. Marginalised groups do not often protest or revolt against ideologies that overwhelmingly support privileged groups because, on some level, they consent to being dominated. This statement prompts an immediate question: Why would anyone consent to such an arrangement? While dominant ideologies may reflect the desires and interests of socially powerful groups, for these ideologies to remain dormant or hegemonic, they must also feature an additional promise. It is in the best interest of the marginalized groups to accept these beliefs as well. Put another way, members of socially powerful groups act to have their world view accepted as the universal way of thinking, and members outside these groups come to accept some of these ideologies because they appear beneficial in some way. This is referred to as a process of spontaneous consent because it is typically informal or unnoticed. The best way to understand the spontaneous consent of hegemony is through an example. A number of ideological components within a nation's higher education system may not be in the best interests of students. One dominant belief suggests that college students should pay for their own education. Despite being affected by the belief, they accept it, and the ideology survives. When such consent fails, however, the concept of hegemony also explains how dominant ideologies evolve to contain this failure through a process of flexible appropriation. In such a situation, it is likely that dominant cultural institutions will absorb any challenging beliefs, integrate them into the hegemonic matrix, and re-establish the previous norm. As a result, hegemonic systems never go away. They simply change form through a process of constant give and take between social group. Hegemonic ideological structures maintain control in part through the never-ending process of integration and appropriation of marginalised ideologies.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़ें और प्रश्न संख्या 46 से 50 तक के उत्तर दीजिए :

आधिपत्य के एक आवश्यक कार्य में एक सामाजिक व्यवस्था के अस्तित्व के प्रति समर्थन देने के लिए लोगों को आश्वस्त करना शामिल है, जो बदले में उनका समर्थन नहीं करती है। सीमांत समूह प्रायः उन विचारधाराओं का विरोध या उनके प्रति विद्रोह नहीं करते, जो विशेषाधिकार-प्राप्त समूहों का अत्याधिक समर्थन करती हैं, क्योंकि वे किसी स्तर पर आधिपत्य जमाने देने पर सहमत होने दे रहे होते हैं। इस कथन से तत्काल प्रश्न खड़ा होता है। कोई भी व्यक्ति क्यों इस प्रकार की व्यवस्था के प्रति सहमत होता है? जबकि वर्चस्वकारी विचारधाराएं सामाजिक रूप से शक्तिशाली समूहों की इच्छाओं और हितों को प्रतिबिंबित करती हैं, इन विचारधाराओं के प्रसुप्त या आधिपत्यवादी बने रहने के लिए उनमें एक अतिरिक्त वचन देने की विशेषता भी आवश्यक है। सीमांत समूहों का श्रेष्ठ हित इन धारणाओं को स्वीकार करने में भी है। अन्य तरीके से कहा जाए तो सामाजिक रूप से शक्तिशाली समूह उनके वैश्विक दृष्टिकोण को सार्वभौमिक चिंतन के तरीके के रूप में स्वीकार करने के लिए कार्य करते हैं और इन समूहों के बाहर के सदस्य इन विचारधाराओं को स्वीकार करने लगते हैं क्योंकि ये उन्हें किसी तरीके से लाभप्रद लगती हैं। इसे स्वतः स्फूर्त सहमति की एक प्रक्रिया के रूप में संदर्भित किया जाता है क्योंकि यह विशिष्ट रूप से अनौपचारिक है या उस पर ध्यान नहीं जाता। आधिपत्य के प्रति स्वतः स्फूर्त सहमति को एक उदाहरण के माध्यम से श्रेष्ठ तरीके से समझा जा सकता है। किसी देश की उच्च शिक्षा प्रणाली के भीतर अनेक वैचारिक घटक विद्यार्थियों के सर्वोत्तम हितों में नहीं हो सकते हैं। एक वर्चस्वकारी धारणा सुझाती है कि कॉलेज के विद्यार्थियों को अपनी स्वयं की शिक्षा का भुगतान करना चाहिए। इस धारणा से प्रभावित होने के बावजूद वे इसे स्वीकार कर लेते हैं और यह विचारधारा बनी रहती है। लेकिन, जब इस प्रकार की सहमति विफल हो जाती है तो आधिपत्य की अवधारणा स्पष्ट करती है कि किस प्रकार वर्चस्वकारी विचारधाराएं लचीले विनियोजन की प्रक्रिया के माध्यम से इस विफलता को रोकने के लिए विकसित होती हैं। इस तरह की स्थिति में यह संभावना है कि वर्चस्वकारी सांस्कृतिक संस्थाएं किसी चुनौतीपूर्ण धारणा को आत्मसात करेंगी उन्हें आधिपत्यवादी मैट्रिक्स में एकीकृत करेंगी और पूर्ववर्ती मानक को पुनः स्थापित करेंगी। परिणामस्वरूप आधिपत्यवादी प्रणालियाँ कभी भी लुप्त नहीं होतीं। वे सामाजिक समूहों के बीच निरंतर लेन-देन की प्रक्रिया के माध्यम से केवल रूप बदलती हैं। आधिपत्यवादी वैचारिक संरचनाएं आंशिक रूप से सीमांत विचारधाराओं के एकीकरण और विनियोजन की कभी भी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया के माध्यम से नियंत्रण बनाए रखती हैं।

Despite hegemony, why marginalised people do not protest?

- (1) Because they are too weak.
- (2) They are not bothered being dominated.
- (3) Privileged groups forcefully suppress them.
- (4) Because of the promise that the dominant ideology is in their best interest.

सीमांत लोग आधिपत्य के बावजूद विरोध क्यों नहीं करते हैं?

- (1) क्योंकि वे अत्यधिक कमजोर हैं।
- (2)



उन्हें आधिपत्य में रहने के बारे में चिंता नहीं है।

(3) विशेषाधिकार-प्राप्त समूह बलपूर्वक उनका दमन करते हैं।

(4) इस वचन के कारण से कि वर्चस्वकारी विचार धारा उनके सर्वोत्तम हित में है।

- 1[Option ID=10181]  
2[Option ID=10182]  
3[Option ID=10183]  
4[Option ID=10184]

Sl. No.47  
QBID:1501047

Read the following passage and answer the questions :

An essential function of hegemony involves convincing people to support the existence of a social system that does not support them in return. Marginalised groups do not often protest or revolt against ideologies that overwhelmingly support privileged groups because, on some level, they consent to being dominated. This statement prompts an immediate question: Why would anyone consent to such an arrangement? While dominant ideologies may reflect the desires and interests of socially powerful groups, for these ideologies to remain dormant or hegemonic, they must also feature an additional promise. It is in the best interest of the marginalized groups to accept these beliefs as well. Put another way, members of socially powerful groups act to have their world view accepted as the universal way of thinking, and members outside these groups come to accept some of these ideologies because they appear beneficial in some way. This is referred to as a process of spontaneous consent because it is typically informal or unnoticed. The best way to understand the spontaneous consent of hegemony is through an example. A number of ideological components within a nation's higher education system may not be in the best interests of students. One dominant belief suggests that college students should pay for their own education. Despite being affected by the belief, they accept it, and the ideology survives. When such consent fails, however, the concept of hegemony also explains how dominant ideologies evolve to contain this failure through a process of flexible appropriation. In such a situation, it is likely that dominant cultural institutions will absorb any challenging beliefs, integrate them into the hegemonic matrix, and re-establish the previous norm. As a result, hegemonic systems never go away. They simply change form through a process of constant give and take between social group. Hegemonic ideological structures maintain control in part through the never-ending process of integration and appropriation of marginalised ideologies.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़ें और प्रश्न संख्या 46 से 50 तक के उत्तर दीजिए :

आधिपत्य के एक आवश्यक कार्य में एक सामाजिक व्यवस्था के अस्तित्व के प्रति समर्थन देने के लिए लोगों को आश्वस्त करना शामिल है, जो बदले में उनका समर्थन नहीं करती है। सीमांत समूह प्रायः उन विचारधाराओं का विरोध या उनके प्रति विद्रोह नहीं करते, जो विशेषाधिकार-प्राप्त समूहों का अत्याधिक समर्थन करती हैं, क्योंकि वे किसी स्तर पर आधिपत्य जमाने देने पर सहमत होने दे रहे होते हैं। इस कथन से तत्काल प्रश्न खड़ा होता है। कोई भी व्यक्ति क्यों इस प्रकार की व्यवस्था के प्रति सहमत होता है? जबकि वर्चस्वकारी विचारधाराएं सामाजिक रूप से शक्तिशाली समूहों की इच्छाओं और हितों को प्रतिबिंबित करती हैं, इन विचारधाराओं के प्रसुप्त या आधिपत्यवादी बने रहने के लिए उनमें एक अतिरिक्त वचन देने की विशेषता भी आवश्यक है। सीमांत समूहों का श्रेष्ठ हित इन धारणाओं को स्वीकार करने में भी है। अन्य तरीके से कहा जाए तो सामाजिक रूप से शक्तिशाली समूह उनके वैश्विक दृष्टिकोण को सार्वभौमिक चिंतन के तरीके के रूप में स्वीकार करने के लिए कार्य करते हैं और इन समूहों के बाहर के सदस्य इन विचारधाराओं को स्वीकार करने लगते हैं क्योंकि ये उन्हें किसी तरीके से लाभप्रद लगती हैं। इसे स्वतः स्फूर्त सहमति की एक प्रक्रिया के रूप में संदर्भित किया जाता है क्योंकि यह विशिष्ट रूप से अनौपचारिक है या उस पर ध्यान नहीं जाता। आधिपत्य के प्रति स्वतः स्फूर्त सहमति को एक उदाहरण के माध्यम से श्रेष्ठ तरीके से समझा जा सकता है। किसी देश की उच्च शिक्षा प्रणाली के भीतर अनेक वैचारिक घटक विद्यार्थियों के सर्वोत्तम हितों में नहीं हो सकते हैं। एक वर्चस्वकारी धारणा सुझाती है कि कॉलेज के विद्यार्थियों को अपनी स्वयं की शिक्षा का भुगतान करना चाहिए। इस धारणा से प्रभावित होने के बावजूद वे इसे स्वीकार कर लेते हैं और यह विचारधारा बनी रहती है। लेकिन, जब इस प्रकार की सहमति विफल हो जाती है तो आधिपत्य की अवधारणा स्पष्ट करती है कि किस प्रकार वर्चस्वकारी विचारधाराएं लचीले विनियोजन की प्रक्रिया के माध्यम से इस विफलता को रोकने के लिए विकसित होती हैं। इस तरह की स्थिति में यह संभावना है कि वर्चस्वकारी सांस्कृतिक संस्थाएं किसी चुनौतीपूर्ण धारणा को आत्मसात करेंगी उन्हें आधिपत्यवादी मैट्रिक्स में एकीकृत करेंगी और पूर्ववर्ती मानक को पुनः स्थापित करेंगी। परिणामस्वरूप आधिपत्यवादी प्रणालियाँ कभी भी लुप्त नहीं होतीं। वे सामाजिक समूहों के बीच निरंतर लेन-देन की प्रक्रिया के माध्यम से केवल रूप बदलती हैं। आधिपत्यवादी वैचारिक संरचनाएं आंशिक रूप से सीमांत विचारधाराओं के एकीकरण और विनियोजन की कभी भी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया के माध्यम से नियंत्रण बनाए रखती हैं।

What is the acceptance of domination called?

(1)



Hegemony

- (2) Marginalisation
- (3) Spontaneous consent
- (4) Reflective desire

वर्चस्व की स्वीकार्यता को क्या कहा जाता है?

- (1) आधिपत्य
- (2) सीमांतीकरण
- (3) स्वतः स्फूर्त सहमति
- (4) प्रतिबिंबिक इच्छा

1[Option ID=10185]  
2[Option ID=10186]  
3[Option ID=10187]  
4[Option ID=10188]

Sl. No.48  
QBID:1501048



Read the following passage and answer the questions :

An essential function of hegemony involves convincing people to support the existence of a social system that does not support them in return. Marginalised groups do not often protest or revolt against ideologies that overwhelmingly support privileged groups because, on some level, they consent to being dominated. This statement prompts an immediate question: Why would anyone consent to such an arrangement? While dominant ideologies may reflect the desires and interests of socially powerful groups, for these ideologies to remain dormant or hegemonic, they must also feature an additional promise. It is in the best interest of the marginalized groups to accept these beliefs as well. Put another way, members of socially powerful groups act to have their world view accepted as the universal way of thinking, and members outside these groups come to accept some of these ideologies because they appear beneficial in some way. This is referred to as a process of spontaneous consent because it is typically informal or unnoticed. The best way to understand the spontaneous consent of hegemony is through an example. A number of ideological components within a nation's higher education system may not be in the best interests of students. One dominant belief suggests that college students should pay for their own education. Despite being affected by the belief, they accept it, and the ideology survives. When such consent fails, however, the concept of hegemony also explains how dominant ideologies evolve to contain this failure through a process of flexible appropriation. In such a situation, it is likely that dominant cultural institutions will absorb any challenging beliefs, integrate them into the hegemonic matrix, and re-establish the previous norm. As a result, hegemonic systems never go away. They simply change form through a process of constant give and take between social group. Hegemonic ideological structures maintain control in part through the never-ending process of integration and appropriation of marginalised ideologies.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़ें और प्रश्न संख्या 46 से 50 तक के उत्तर दीजिए :

आधिपत्य के एक आवश्यक कार्य में एक सामाजिक व्यवस्था के अस्तित्व के प्रति समर्थन देने के लिए लोगों को आश्वस्त करना शामिल है, जो बदले में उनका समर्थन नहीं करती है। सीमांत समूह प्रायः उन विचारधाराओं का विरोध या उनके प्रति विद्रोह नहीं करते, जो विशेषाधिकार-प्राप्त समूहों का अत्याधिक समर्थन करती हैं, क्योंकि वे किसी स्तर पर आधिपत्य जमाने देने पर सहमत होने दे रहे होते हैं। इस कथन से तत्काल प्रश्न खड़ा होता है। कोई भी व्यक्ति क्यों इस प्रकार की व्यवस्था के प्रति सहमत होता है? जबकि वर्चस्वकारी विचारधाराएं सामाजिक रूप से शक्तिशाली समूहों की इच्छाओं और हितों को प्रतिबिंबित करती हैं, इन विचारधाराओं के प्रसुप्त या आधिपत्यवादी बने रहने के लिए उनमें एक अतिरिक्त वचन देने की विशेषता भी आवश्यक है। सीमांत समूहों का श्रेष्ठ हित इन धारणाओं को स्वीकार करने में भी है। अन्य तरीके से कहा जाए तो सामाजिक रूप से शक्तिशाली समूह उनके वैश्विक दृष्टिकोण को सार्वभौमिक चिंतन के तरीके के रूप में स्वीकार करने के लिए कार्य करते हैं और इन समूहों के बाहर के सदस्य इन विचारधाराओं को स्वीकार करने लगते हैं क्योंकि ये उन्हें किसी तरीके से लाभप्रद लगती हैं। इसे स्वतः स्फूर्त सहमति की एक प्रक्रिया के रूप में संदर्भित किया जाता है क्योंकि यह विशिष्ट रूप से अनौपचारिक है या उस पर ध्यान नहीं जाता। आधिपत्य के प्रति स्वतः स्फूर्त सहमति को एक उदाहरण के माध्यम से श्रेष्ठ तरीके से समझा जा सकता है। किसी देश की उच्च शिक्षा प्रणाली के भीतर अनेक वैचारिक घटक विद्यार्थियों के सर्वोत्तम हितों में नहीं हो सकते हैं। एक वर्चस्वकारी धारणा सुझाती है कि कॉलेज के विद्यार्थियों को अपनी स्वयं की शिक्षा का भुगतान करना चाहिए। इस धारणा से प्रभावित होने के बावजूद वे इसे स्वीकार कर लेते हैं और यह विचारधारा बनी रहती है। लेकिन, जब इस प्रकार की सहमति विफल हो जाती है तो आधिपत्य की अवधारणा स्पष्ट करती है कि किस प्रकार वर्चस्वकारी विचारधाराएं लचीले विनियोजन की प्रक्रिया के माध्यम से इस विफलता को रोकने के लिए विकसित होती हैं। इस तरह की स्थिति में यह संभावना है कि वर्चस्वकारी सांस्कृतिक संस्थाएं किसी चुनौतीपूर्ण धारणा को आत्मसात करेंगी उन्हें आधिपत्यवादी मैट्रिक्स में एकीकृत करेंगी और पूर्ववर्ती मानक को पुनः स्थापित करेंगी। परिणामस्वरूप आधिपत्यवादी प्रणालियाँ कभी भी लुप्त नहीं होतीं। वे सामाजिक समूहों के बीच निरंतर लेन-देन की प्रक्रिया के माध्यम से केवल रूप बदलती हैं। आधिपत्यवादी वैचारिक संरचनाएं आंशिक रूप से सीमांत विचारधाराओं के एकीकरण और विनियोजन की कभी भी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया के माध्यम से नियंत्रण बनाए रखती हैं।

The dominant ideology survives because of its

- (1) Social Power
- (2) Flexible appropriation
- (3) Beneficial features
- (4) Ideological components

वर्चस्वकारी विचारधारा किस कारण से बनी रहती है?

- (1) सामाजिक शक्ति
- (2)



(3) लाभप्रद विशेषताएं

(4) वैचारिक घटक

1[Option ID=10189]

2[Option ID=10190]

3[Option ID=10191]

4[Option ID=10192]

Sl. No.49

QBID:1501049

Read the following passage and answer the questions :

An essential function of hegemony involves convincing people to support the existence of a social system that does not support them in return. Marginalised groups do not often protest or revolt against ideologies that overwhelmingly support privileged groups because, on some level, they consent to being dominated. This statement prompts an immediate question: Why would anyone consent to such an arrangement? While dominant ideologies may reflect the desires and interests of socially powerful groups, for these ideologies to remain dormant or hegemonic, they must also feature an additional promise. It is in the best interest of the marginalized groups to accept these beliefs as well. Put another way, members of socially powerful groups act to have their world view accepted as the universal way of thinking, and members outside these groups come to accept some of these ideologies because they appear beneficial in some way. This is referred to as a process of spontaneous consent because it is typically informal or unnoticed. The best way to understand the spontaneous consent of hegemony is through an example. A number of ideological components within a nation's higher education system may not be in the best interests of students. One dominant belief suggests that college students should pay for their own education. Despite being affected by the belief, they accept it, and the ideology survives. When such consent fails, however, the concept of hegemony also explains how dominant ideologies evolve to contain this failure through a process of flexible appropriation. In such a situation, it is likely that dominant cultural institutions will absorb any challenging beliefs, integrate them into the hegemonic matrix, and re-establish the previous norm. As a result, hegemonic systems never go away. They simply change form through a process of constant give and take between social group. Hegemonic ideological structures maintain control in part through the never-ending process of integration and appropriation of marginalised ideologies.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़ें और प्रश्न संख्या 46 से 50 तक के उत्तर दीजिए :

आधिपत्य के एक आवश्यक कार्य में एक सामाजिक व्यवस्था के अस्तित्व के प्रति समर्थन देने के लिए लोगों को आश्वस्त करना शामिल है, जो बदले में उनका समर्थन नहीं करती है। सीमांत समूह प्रायः उन विचारधाराओं का विरोध या उनके प्रति विद्रोह नहीं करते, जो विशेषाधिकार-प्राप्त समूहों का अत्याधिक समर्थन करती हैं, क्योंकि वे किसी स्तर पर आधिपत्य जमाने देने पर सहमत होने दे रहे होते हैं। इस कथन से तत्काल प्रश्न खड़ा होता है। कोई भी व्यक्ति क्यों इस प्रकार की व्यवस्था के प्रति सहमत होता है? जबकि वर्चस्वकारी विचारधाराएं सामाजिक रूप से शक्तिशाली समूहों की इच्छाओं और हितों को प्रतिबिंबित करती हैं, इन विचारधाराओं के प्रसुप्त या आधिपत्यवादी बने रहने के लिए उनमें एक अतिरिक्त वचन देने की विशेषता भी आवश्यक है। सीमांत समूहों का श्रेष्ठ हित इन धारणाओं को स्वीकार करने में भी है। अन्य तरीके से कहा जाए तो सामाजिक रूप से शक्तिशाली समूह उनके वैश्विक दृष्टिकोण को सार्वभौमिक चिंतन के तरीके के रूप में स्वीकार करने के लिए कार्य करते हैं और इन समूहों के बाहर के सदस्य इन विचारधाराओं को स्वीकार करने लगते हैं क्योंकि ये उन्हें किसी तरीके से लाभप्रद लगती हैं। इसे स्वतः स्फूर्त सहमति की एक प्रक्रिया के रूप में संदर्भित किया जाता है क्योंकि यह विशिष्ट रूप से अनौपचारिक है या उस पर ध्यान नहीं जाता। आधिपत्य के प्रति स्वतः स्फूर्त सहमति को एक उदाहरण के माध्यम से श्रेष्ठ तरीके से समझा जा सकता है। किसी देश की उच्च शिक्षा प्रणाली के भीतर अनेक वैचारिक घटक विद्यार्थियों के सर्वोत्तम हितों में नहीं हो सकते हैं। एक वर्चस्वकारी धारणा सुझाती है कि कॉलेज के विद्यार्थियों को अपनी स्वयं की शिक्षा का भुगतान करना चाहिए। इस धारणा से प्रभावित होने के बावजूद वे इसे स्वीकार कर लेते हैं और यह विचारधारा बनी रहती है। लेकिन, जब इस प्रकार की सहमति विफल हो जाती है तो आधिपत्य की अवधारणा स्पष्ट करती है कि किस प्रकार वर्चस्वकारी विचारधाराएं लचीले विनियोजन की प्रक्रिया के माध्यम से इस विफलता को रोकने के लिए विकसित होती हैं। इस तरह की स्थिति में यह संभावना है कि वर्चस्वकारी सांस्कृतिक संस्थाएं किसी चुनौतीपूर्ण धारणा को आत्मसात करेंगी उन्हें आधिपत्यवादी मैट्रिक्स में एकीकृत करेंगी और पूर्ववर्ती मानक को पुनः स्थापित करेंगी। परिणामस्वरूप आधिपत्यवादी प्रणालियाँ कभी भी लुप्त नहीं होतीं। वे सामाजिक समूहों के बीच निरंतर लेन-देन की प्रक्रिया के माध्यम से केवल रूप बदलती हैं। आधिपत्यवादी वैचारिक संरचनाएं आंशिक रूप से सीमांत विचारधाराओं के एकीकरण और विनियोजन की कभी भी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया के माध्यम से नियंत्रण बनाए रखती हैं।

The dominant cultural institutions have the power to

- (A) Absorb challenges
- (B) Maintain relations with social groups
- (C) Destroy opposition
- (D) Re-establish the previous norms

Choose the most appropriate answer from the options given below :

- (1) (A) and (B) only
- (2) (B), and (C) only
- (3) (C) and (D) only
- (4) (A) and (D) only

वर्चस्वकारी सांस्कृतिक संस्थाओं में क्या शक्ति होती है?

- (A) चुनौतियों को आत्मसात करना
- (B) सामाजिक समूहों के साथ संबंध बनाए रखना
- (C) विरोध को नष्ट करना
- (D) पूर्ववर्ती मानकों को पुनः स्थापित करना

सही विकल्प चुनिए :

- (1) केवल (A) और (B)
- (2) केवल (B) और (C)
- (3) केवल (C) और (D)
- (4) केवल (A) और (D)

- 1[Option ID=10193]
- 2[Option ID=10194]
- 3[Option ID=10195]
- 4[Option ID=10196]

Sl. No.50  
QBID:1501050





Read the following passage and answer the questions :

An essential function of hegemony involves convincing people to support the existence of a social system that does not support them in return. Marginalised groups do not often protest or revolt against ideologies that overwhelmingly support privileged groups because, on some level, they consent to being dominated. This statement prompts an immediate question: Why would anyone consent to such an arrangement? While dominant ideologies may reflect the desires and interests of socially powerful groups, for these ideologies to remain dormant or hegemonic, they must also feature an additional promise. It is in the best interest of the marginalized groups to accept these beliefs as well. Put another way, members of socially powerful groups act to have their world view accepted as the universal way of thinking, and members outside these groups come to accept some of these ideologies because they appear beneficial in some way. This is referred to as a process of spontaneous consent because it is typically informal or unnoticed. The best way to understand the spontaneous consent of hegemony is through an example. A number of ideological components within a nation's higher education system may not be in the best interests of students. One dominant belief suggests that college students should pay for their own education. Despite being affected by the belief, they accept it, and the ideology survives. When such consent fails, however, the concept of hegemony also explains how dominant ideologies evolve to contain this failure through a process of flexible appropriation. In such a situation, it is likely that dominant cultural institutions will absorb any challenging beliefs, integrate them into the hegemonic matrix, and re-establish the previous norm. As a result, hegemonic systems never go away. They simply change form through a process of constant give and take between social group. Hegemonic ideological structures maintain control in part through the never-ending process of integration and appropriation of marginalised ideologies.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़ें और प्रश्न संख्या 46 से 50 तक के उत्तर दीजिए :

आधिपत्य के एक आवश्यक कार्य में एक सामाजिक व्यवस्था के अस्तित्व के प्रति समर्थन देने के लिए लोगों को आश्वस्त करना शामिल है, जो बदले में उनका समर्थन नहीं करती है। सीमांत समूह प्रायः उन विचारधाराओं का विरोध या उनके प्रति विद्रोह नहीं करते, जो विशेषाधिकार-प्राप्त समूहों का अत्याधिक समर्थन करती हैं, क्योंकि वे किसी स्तर पर आधिपत्य जमाने देने पर सहमत होने दे रहे होते हैं। इस कथन से तत्काल प्रश्न खड़ा होता है। कोई भी व्यक्ति क्यों इस प्रकार की व्यवस्था के प्रति सहमत होता है? जबकि वर्चस्वकारी विचारधाराएं सामाजिक रूप से शक्तिशाली समूहों की इच्छाओं और हितों को प्रतिबिंबित करती हैं, इन विचारधाराओं के प्रसुप्त या आधिपत्यवादी बने रहने के लिए उनमें एक अतिरिक्त वचन देने की विशेषता भी आवश्यक है। सीमांत समूहों का श्रेष्ठ हित इन धारणाओं को स्वीकार करने में भी है। अन्य तरीके से कहा जाए तो सामाजिक रूप से शक्तिशाली समूह उनके वैश्विक दृष्टिकोण को सार्वभौमिक चिंतन के तरीके के रूप में स्वीकार करने के लिए कार्य करते हैं और इन समूहों के बाहर के सदस्य इन विचारधाराओं को स्वीकार करने लगते हैं क्योंकि ये उन्हें किसी तरीके से लाभप्रद लगती हैं। इसे स्वतः स्फूर्त सहमति की एक प्रक्रिया के रूप में संदर्भित किया जाता है क्योंकि यह विशिष्ट रूप से अनौपचारिक है या उस पर ध्यान नहीं जाता। आधिपत्य के प्रति स्वतः स्फूर्त सहमति को एक उदाहरण के माध्यम से श्रेष्ठ तरीके से समझा जा सकता है। किसी देश की उच्च शिक्षा प्रणाली के भीतर अनेक वैचारिक घटक विद्यार्थियों के सर्वोत्तम हितों में नहीं हो सकते हैं। एक वर्चस्वकारी धारणा सुझाती है कि कॉलेज के विद्यार्थियों को अपनी स्वयं की शिक्षा का भुगतान करना चाहिए। इस धारणा से प्रभावित होने के बावजूद वे इसे स्वीकार कर लेते हैं और यह विचारधारा बनी रहती है। लेकिन, जब इस प्रकार की सहमति विफल हो जाती है तो आधिपत्य की अवधारणा स्पष्ट करती है कि किस प्रकार वर्चस्वकारी विचारधाराएं लचीले विनियोजन की प्रक्रिया के माध्यम से इस विफलता को रोकने के लिए विकसित होती हैं। इस तरह की स्थिति में यह संभावना है कि वर्चस्वकारी सांस्कृतिक संस्थाएं किसी चुनौतीपूर्ण धारणा को आत्मसात करेंगी उन्हें आधिपत्यवादी मैट्रिक्स में एकीकृत करेंगी और पूर्ववर्ती मानक को पुनः स्थापित करेंगी। परिणामस्वरूप आधिपत्यवादी प्रणालियाँ कभी भी लुप्त नहीं होतीं। वे सामाजिक समूहों के बीच निरंतर लेन-देन की प्रक्रिया के माध्यम से केवल रूप बदलती हैं। आधिपत्यवादी वैचारिक संरचनाएं आंशिक रूप से सीमांत विचारधाराओं के एकीकरण और विनियोजन की कभी भी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया के माध्यम से नियंत्रण बनाए रखती हैं।

The passage explains

- (1) The forced absorption of the marginalized into the mainstream
- (2) The establishment of the ideology of the marginalised
- (3) The defects of spontaneous consent
- (4) The survival of dominant ideology against the challenges

उपरोक्त गद्यांश क्या स्पष्ट करता है?

- (1) सीमांतीकृत का मुख्य धारा में बलात् आत्मसात करना
- (2) सीमांतीकृत की विचारधारा की स्थापना

- (3) स्वतः स्फूर्त सहमति के दोष  
(4) चुनौतियों के विरुद्ध वर्चस्वकारी विचारधारा का बने रहना

1[Option ID=10197]  
2[Option ID=10198]  
3[Option ID=10199]  
4[Option ID=10200]

Sl. No.51  
QBID:851001

ध्वनिविज्ञानांत खंयचे शाखेचो अभ्यास जाय ना?

- (1) स्वानांचे गात्र  
(2) स्वनिम  
(3) स्वनांची चक्रवती  
(4) स्वनांची तीव्रता

1[Option ID=17601]  
2[Option ID=17602]  
3[Option ID=17603]  
4[Option ID=17604]

Sl. No.52  
QBID:851002

गाय फांत्या पारार भुक्ताली - हें वाक्य खंयचे नदरेन चूक आसा?

- (1) गाय फांत्या पारार भुक्ताली - हें वाक्य खंयचे नदरेन चूक आसा?  
(2) व्याकरणाचे नदरेन  
(3) संकेत-प्रयोगीक नदरेन  
(4) भासविज्ञानाचे नदरेन

1[Option ID=17605]  
2[Option ID=17606]  
3[Option ID=17607]  
4[Option ID=17608]

Sl. No.53  
QBID:851003

भासविज्ञानाचे नदरेन

- (1) इण्डो-आर्यन  
(2) तुखारी  
(3) तुखारी  
(4) तिबेटो बर्मन

1[Option ID=17609]  
2[Option ID=17610]  
3[Option ID=17611]  
4[Option ID=17612]

Sl. No.54  
QBID:851004

खंयच्या भासविज्ञानिकान कोंकणीच्या स बोलयांचो अभ्यास करून तिका मराठी, गुजराती आनी सिंहालीस भाशां वांगडा अर्विल्ल्या इण्डो-आर्यनाच्या दक्षिण-पश्चिमे कडल्या फाट्यांत बसयली?

- (1) डॉ. सुमित्र मंगेश कत्रे  
(2) डॉ. सु. बा. कुलकर्णी  
(3) डॉ. मॅथ्यू आल्मैदा  
(4) डॉ. ए. एम. घाटगे

1[Option ID=17613]  
2[Option ID=17614]  
3[Option ID=17615]  
4[Option ID=17616]

Sl. No.55  
QBID:851005

नाम आनी सर्वनाम हांच्या क्रियापदा कडेन आशिल्ल्या संबंदाक कितें म्हणटात?

- (1) उपसर्ग



- (2) प्रत्यय  
(3) कारक संबंद  
(4) कारक संबंद

1[Option ID=17617]  
2[Option ID=17618]  
3[Option ID=17619]  
4[Option ID=17620]

Sl. No.56  
QBID:851006

सकयल दिल्ले वळेरेंतले कोण कोंकणी भाशेचे वैयाकरणी नाशिल्ले ?

- (1) गाशपार द सां मिगेल  
(2) तोमास इशतेव्ह  
(3) कारेल प्रिकील  
(4) दादा संबी एलियोस द क्रुस रेडर

1[Option ID=17621]  
2[Option ID=17622]  
3[Option ID=17623]  
4[Option ID=17624]

Sl. No.57  
QBID:851007

नामाक विभक्ती प्रत्यय लागतकच जें रूप जाता, ताका कितें म्हणटात ?

- (1) सार्वनामिक विशेषण  
(2) सार्वनामिक विशेषण  
(3) विध्यर्थ  
(4) विध्यर्थ

1[Option ID=17625]  
2[Option ID=17626]  
3[Option ID=17627]  
4[Option ID=17628]

Sl. No.58  
QBID:851008

सामान्य रूप

- (1) पयली  
(2) दुसरी  
(3) तिसरी  
(4) चवथी

1[Option ID=17629]  
2[Option ID=17630]  
3[Option ID=17631]  
4[Option ID=17632]

Sl. No.59  
QBID:851009

भारताचे अस्तन्त दिकेक आशिल्लया अरबी समुद्राचे तडेवयल्या गुजरात सावन सकयल दक्षिण दिके मेरेन आशिल्लया वाठाराक कसलें संबोधन आशिल्लें ?

- (1) भारताचे अस्तन्त दिकेक आशिल्लया अरबी समुद्राचे तडेवयल्या गुजरात सावन सकयल दक्षिण दिके मेरेन आशिल्लया वाठाराक कसलें संबोधन आशिल्लें ?  
(2) अपरान्त  
(3) सप्तकोंकण  
(4) सुनापरान्त

1[Option ID=17633]  
2[Option ID=17634]  
3[Option ID=17635]  
4[Option ID=17636]

Sl. No.60  
QBID:851010



सातव्या शतमानांत भारतांत आयिल्ल्या हुयेनत्सँग ह्या चिनी विद्वानान आपणाल्या His-yü chi. ('हिस-यू-ची') हे दीसपट्टेंत कितें नोंदयलां ?

- (1) सातव्या शतमानांत भारतांत आयिल्ल्या हुयेनत्सँग ह्या चिनी विद्वानान आपणाल्या His-yü chi. ('हिस-यू-ची') हे दीसपट्टेंत कितें नोंदयलां ?
- (2) 'कुक्कुणा' हा उतरा सावन 'कोंकण' हे उतर साकार जालां
- (3) अरबी समुद्र आनी अस्तन्त घाट हांचे मजगतीं अशिल्लो भुंये वाठार म्हळ्यार 'कोंकण्ये, आनी थंयसर राबितो करपी लोक म्हळ्यार 'कोंकण्ये' आमचो लोक मात तांका 'कानारी' अशें म्हणटात
- (4) उत्तर कोंकण म्हळ्यार अपरान्त आनी दक्षिण कोंकण म्हळ्यार गोमन्तक

1[Option ID=17637]  
2[Option ID=17638]  
3[Option ID=17639]  
4[Option ID=17640]

Sl. No.61  
QBID:851011

उत्तर कोंकण म्हळ्यार अपरान्त आनी दक्षिण कोंकण म्हळ्यार गोमन्तक

- (1) अरबी
- (2) हळकन्नड
- (3) हळकन्नड
- (4) रोमी

1[Option ID=17641]  
2[Option ID=17642]  
3[Option ID=17643]  
4[Option ID=17644]

Sl. No.62  
QBID:851012

साबारांत पयलो, दुसऱ्या शतमानांतलो, कोंकणी कोरीव लेख हयवळें हांगसर मेळटा तो कोणाल्या समया वयलो ?

- (1) गुप्त साम्राज्याच्या
- (2) चन्द्रगुप्त मौर्य साम्राज्याच्या
- (3) कदम्ब साम्राज्याच्या
- (4) पुर्तुगेज साम्राज्याच्या

1[Option ID=17645]  
2[Option ID=17646]  
3[Option ID=17647]  
4[Option ID=17648]

Sl. No.63  
QBID:851013

“देवा तूं पाव” ही हांगेली कांय बऱ्या कथांमदली एक कथा” अशे पुंडलिक नायक कोणासंबंदान म्हण्टात ?

- (1) “देवा तूं पाव” ही हांगेली कांय बऱ्या कथांमदली एक कथा” अशे पुंडलिक नायक कोणासंबंदान म्हण्टात ?
- (2) तोमाझिन्यू कादोंज
- (3) तोमाझिन्यू कादोंज
- (4) जॅस फर्नादीस

1[Option ID=17649]  
2[Option ID=17650]  
3[Option ID=17651]  
4[Option ID=17652]

Sl. No.64  
QBID:851014

‘मावशेभाव’ ही कथा हातूंतल्या कोणे बरयल्या ?

- (1) ‘मावशेभाव’ ही कथा हातूंतल्या कोणे बरयल्या ?
- (2) पुंडलिक नायक
- (3) दामोदर मावजो
- (4) गजानन जोग

1[Option ID=17653]  
2[Option ID=17654]

3[Option ID=17655]  
4[Option ID=17656]

Sl. No.65  
QBID:851015

‘असो कथाकार, अशोय कथा, या नावान कोणे आनी कोणाल्या, खंयच्या कथाशेल्याक प्रस्तावना बरयल्या ?

- (1) रवींद्र केळेकार हांणी दामोदर मावजो हांच्या ‘जागरणां’ ह्या कथाशेल्याक
- (2) पुंडलीक नारायण नायक हांणी रामनाथ ग गावडे हांच्या ‘पिशाक पिपळ’ ह्या कथाशेल्याक
- (3) लक्ष्मणराय सरदेसाय हांणी गजानन जोग हांच्या ‘रूद्र’ ह्या कथा शेल्याक
- (4) रवींद्र केळेकार हांणी चंद्रकान्त केणी हांच्या, ‘अळमीं’ ह्या कथा शेल्याक

1[Option ID=17657]  
2[Option ID=17658]  
3[Option ID=17659]  
4[Option ID=17660]

Sl. No.66  
QBID:851016

स. श्री श्रीनिवास भोवे काकुलो हांणी बरयल्यो ‘कुमार कथा’ ‘कुटुंबातलो मोग’ ह्यो खंयच्या वर्सा उजवाडाक आयल्यो ?

- (1) 2004
- (2) 2013
- (3) 2015
- (4) 2015

1[Option ID=17661]  
2[Option ID=17662]  
3[Option ID=17663]  
4[Option ID=17664]

Sl. No.67  
QBID:851017

‘तुकाराम रामा शेट’ हांच्या ‘मनमळब’ कविता शेल्यांतल्या ‘माये वसुंधरे’ या कवितेच्या सकल दिल्या एका कडव्यांतली निमणी वळ हांतूतली खंयची ?

तूच आमची धात्री  
तूच आमाची जन्मदात्री  
तुजेच हुंटेयेत जिवावळ

- (1) आनी विशाल सागर
- (2) आनी विशाल सागर
- (3) पोसता ही अज्रंवर
- (4) जाल्या विविधतायेन साकार

1[Option ID=17665]  
2[Option ID=17666]  
3[Option ID=17667]  
4[Option ID=17668]

Sl. No.68  
QBID:851018

‘अग्रुप’ ह्या प्रातिनिधिक कविता संग्रहाची उजवाडणी खंयच्या वर्सा जाली ?

- (1) 1983
- (2) 1985
- (3) 1986
- (4) 1986

1[Option ID=17669]  
2[Option ID=17670]  
3[Option ID=17671]  
4[Option ID=17672]

Sl. No.69  
QBID:851019

हांतूतलो खंयचो कविता संग्रह नागेश करमली हांचो न्हय ?

- (1) वंशकुळाचें देणें
- (2) वंशकुळाचें देणें
- (3) थेंव्या-- थेंव्यात

(4) थेंब्या-- थेंब्यात

1[Option ID=17673]  
2[Option ID=17674]  
3[Option ID=17675]  
4[Option ID=17676]

Sl. No.70  
QBID:851020

जोरगत

(1) 

(2) मुक्त काव्य

(3) भक्ति काव्य

(4) लोकगीत

1[Option ID=17677]  
2[Option ID=17678]  
3[Option ID=17679]  
4[Option ID=17680]

Sl. No.71  
QBID:851021

लोकगीत

(1)  साहित्य अकादेमी

(2) गोंय कला अकादमी

(3) गोंय कला अकादमी

(4) गोवा कोंकणी अकादमी

1[Option ID=17681]  
2[Option ID=17682]  
3[Option ID=17683]  
4[Option ID=17684]

Sl. No.72  
QBID:851022

गोयांतले उत्सवी कोंकणी रंगमाचयेर पयलें नाटक केन्ना सादर जालें ?

(1) 1962

(2) 1976

(3) 1977

(4) 1988

1[Option ID=17685]  
2[Option ID=17686]  
3[Option ID=17687]  
4[Option ID=17688]

Sl. No.73  
QBID:851023

वामन रघुनाथ शणै वदें वालावलिकार उपाख्य शणै गोंयबाब हांच्या 'मोगाचें लग्न' हे नाट्यरचनेक 'व्होंवळीक' ह्या माथाळयाची प्रस्तावना कोणे बरयिल्ली ?

(1) कृष्णा लक्ष्मण मोये

(2) आचार्य रामचन्द्र शंकर नायक

(3) पुंडलीक नारायण दाण्डो

(4) जुवांव आगोस्तीन फर्नाण्डिस

1[Option ID=17689]  
2[Option ID=17690]  
3[Option ID=17691]  
4[Option ID=17692]

Sl. No.74  
QBID:851024

'तुळशीचें लग्न' हे नाटक कोणे बरयिल्लें ?

(1)



‘तुळशीचें लमन’ हे नाटक कोणे बरयिल्लें?

- (2) रवीन्द्र केळेकार
- (3) पुंडलीक नारायण दाण्डो
- (4) भरत नायक

1[Option ID=17693]  
2[Option ID=17694]  
3[Option ID=17695]  
4[Option ID=17696]

Sl. No.75  
QBID:851025

भरत नायक

- (1) ‘उगडास पटी हो निबंद संग्रह म्हळ्यार \_\_\_\_\_
- (2) आत्मचरित्रात्मक लेख
- (3) अणभवाची उतरां
- (4) जिणेतले पत्रकारितेचे अणभव

1[Option ID=17697]  
2[Option ID=17698]  
3[Option ID=17699]  
4[Option ID=17700]

Sl. No.76  
QBID:851026

“तुजें ‘घुस्पागोंदळ’ हें पारजत खूप आवडलें, असले लेख पारजतांत येवक जाय, तूं नेमान असल्या पांवड्याचे लेख ते सदरां बरयतलो अशी आस्त धरतां”  
वयर दिल्ले विधान कोणे आनी कोणा संदर्भांत केलां ?

- (1) माधव बोरकार हांणी राजय पवार हांच्या संदर्भांत
- (2) माधव बोरकार हांणी राजय पवार हांच्या संदर्भांत
- (3) डॉ. मनोहरराय सरदेसाय हांणी दिनेश विनायक भरणे हांच्या संदर्भांत
- (4) पुंडलीक नायक हांणी परेश कामत हांच्या संदर्भांत

1[Option ID=17701]  
2[Option ID=17702]  
3[Option ID=17703]  
4[Option ID=17704]

Sl. No.77  
QBID:851027

“स्वाती” निबंद झेल्यातलो “हांतूत काय अर्थ ना” हो निबंध कोणाचो?

- (1) लुसियो रोड्रीक्स
- (2) दत्ताराम मुखठणकार
- (3) पु. ल. देशपांडे
- (4) निलकंठ साळकार

1[Option ID=17705]  
2[Option ID=17706]  
3[Option ID=17707]  
4[Option ID=17708]

Sl. No.78  
QBID:851028

सकल दिल्ले खंयचे निबंदाचे पुस्तक चंद्रकांत केणी हांचे न्हय?

- (1) सकल दिल्ले खंयचे निबंदाचे पुस्तक चंद्रकांत केणी हांचे न्हय?
- (2) आपालिपा
- (3) साहित्य सुवाद
- (4) साहित्य सुवाद

1[Option ID=17709]  
2[Option ID=17710]

3[Option ID=17711]  
4[Option ID=17712]

Sl. No.79  
QBID:851029

‘कोटांतल्यान भायर सल्लो जातिवन्त भालो’ ही कसले लक्षणेची देख?

- (1) सारोपा लक्षणेची
- (2) साध्यवसाना लक्षणेची
- (3) उपादान लक्षणेची
- (4) गौणी लक्षणेची

1[Option ID=17713]  
2[Option ID=17714]  
3[Option ID=17715]  
4[Option ID=17716]

Sl. No.80  
QBID:851030

‘काव्य रसवत् आसता, काव्य प्रेयसवत् आसता, वो काव्य ऊर्जस्वी आसता,’ अशें कोण म्हणटा?

- (1) भामह आनी दण्डी
- (2) विश्वनाथ आनी राजशेखर
- (3) मम्मट आनी रुद्रट
- (4) भरतमुनी आनी दण्डी

1[Option ID=17717]  
2[Option ID=17718]  
3[Option ID=17719]  
4[Option ID=17720]

Sl. No.81  
QBID:851031

‘सहृदयलीला, साहित्यमीमांसा, काव्यप्रकाशसङ्केत, व्यक्तिविवेक व्याख्यान आनी अलङ्कारसर्वस्व’ ह्या ग्रंथांचो रचनाकार कोण?

- (1)
- (2) हेमचन्द्र
- (3) रुद्रट
- (4) रुय्यक

1[Option ID=17721]  
2[Option ID=17722]  
3[Option ID=17723]  
4[Option ID=17724]

Sl. No.82  
QBID:851032

‘अपन्हुती’क कसले संज्ञेन वळखतात?

- (1) अर्थालङ्कार
- (2) शब्दालङ्कार
- (3) उभयालङ्कार
- (4) सत्त्वालङ्कार

1[Option ID=17725]  
2[Option ID=17726]  
3[Option ID=17727]  
4[Option ID=17728]

Sl. No.83  
QBID:851033

‘कोलासणी’ ह्या उतराचो अर्थ म्हळ्यार \_\_\_\_\_

- (1) झाड तासपाची क्रिया
- (2) कोल्याक धांवडावन घालपाची क्रिया
- (3) कोयणे बालाच्या खेळातली हार
- (4) लोक संस्कृतायेतलो एक विधि

1[Option ID=17729]  
2[Option ID=17730]  
3[Option ID=17731]  
4[Option ID=17732]

Sl. No.84  
QBID:851034

दसऱ्याऒ्या वेळार ढाऒ करतात त्या धनगरांऒ्या ढाऒाक किदें ढ्हणटात ?

- (1) ऒपय
- (2) गौफ
- (3) हौरबाला
- (4) ढदष

1[Option ID=17733]  
2[Option ID=17734]  
3[Option ID=17735]  
4[Option ID=17736]

Sl. No.85  
QBID:851035

गौंयांत आशिल्या ढाथपंथी गौंसाय ऒढातीऒी ढूळ सुवात खंयऒी ?

- (1) खौतीगांव
- (2) आंय
- (3) इब्राढपूर
- (4) इब्राढपूर

1[Option ID=17737]  
2[Option ID=17738]  
3[Option ID=17739]  
4[Option ID=17740]

Sl. No.86  
QBID:851036

ढारतीय दैवत संकल्पढेत कितले पांवडे आसात आढी खंयऒे आसात ?

- (1) तीढ, वैदीक, शिरट आढी ऒेत्रपाळ
- (2) दौढ, दैवीक आढी पुराण
- (3) तीढ, ढातृदैवत, पितृदैवत, गुरुदैवत
- (4) ऒार, ऒेत्रपाळ, ढातृदैवत, उपढिषदीय, अतिंद्रिय

1[Option ID=17741]  
2[Option ID=17742]  
3[Option ID=17743]  
4[Option ID=17744]

Sl. No.87  
QBID:851037

तुळ्यात्मक साहित्य ही ंक 'ढ्राढक संऒा' (ढौगस टर्ढ) ऒावढ आसा अशें ऒौणे ढ्हळें ?

- (1) लेढ ऒूपर
- (2) ंरिस्टॉटल
- (3) प्लेटौ
- (4) ढॅथ्यू आढौलड

1[Option ID=17745]  
2[Option ID=17746]  
3[Option ID=17747]  
4[Option ID=17748]

Sl. No.88  
QBID:851038

'तुळ्यात्मक साहित्य ढ्हळ्यार आंतरराश्ट्रीय वाङ्ढयीढ संढदाऒौ इतिहासऒ' अशें 1932त ऒौणे ढ्हळें ?

- (1) ंढ्.ंफ्. ऒ्यूयेर्द
- (2) हेब्री ंऒ्. ंऒ्. रेढाक
- (3)



पॉल व्हॅन टियेम

(4) रेन वेलेक्

1[Option ID=17749]  
2[Option ID=17750]  
3[Option ID=17751]  
4[Option ID=17752]

Sl. No.89  
QBID:851039

इंग्लण्डांतल्यो नाट्यकृती आनी चिनी नाट्यकृती हांच्यातलें सम्य दाखोवन दिवपी तुळात्मक समिक्षा कोणे केली ?

- (1) जेम्स जे. वाय. लिऊ  
(2) एक्स्. वॅड्ग आनी वाय. लिऊ  
(3) एच्. डॉड्ग आनी डी. यूए  
(4) वाय्. डॉड्ग

1[Option ID=17753]  
2[Option ID=17754]  
3[Option ID=17755]  
4[Option ID=17756]

Sl. No.90  
QBID:851040

‘एन एस्से ऑन ड्रामाटिक पोएसी’ हो निबंध कोणे बरयलो ?

- (1) अन्स्ट आर्. कर्टियस  
(2) आर्थर ओ. लव्हजॉय  
(3) एस्. एस्. प्रावर  
(4) जॉन ड्रायडन

1[Option ID=17757]  
2[Option ID=17758]  
3[Option ID=17759]  
4[Option ID=17760]

Sl. No.91  
QBID:851041

सकयल दिल्ली खंयचीं विधानां अचूक आसात ?

- (A) पिञ्जीन हयो संपर्काचे गरजेंतल्यान जल्माक आयिल्ल्यो भासो आसात  
(B) क्रियॉल ही आवयभास आसता  
(C) लियॉनार्ड ब्लूमफिल्ड हांणी 1933 वर्सा पिञ्जीन भाशेची संकल्पना सगळ्यांत पयलीं मांडली  
(D) भासविज्ञान पिञ्जिनाक अपुर्ण भार मानता

- (1) (A), (B), (C)  
(2) (A), (B), (D)  
(3) (A), (C), (D)  
(4) (B), (C), (D)

1[Option ID=17761]  
2[Option ID=17762]  
3[Option ID=17763]  
4[Option ID=17764]

Sl. No.92  
QBID:851042

27 जून, 1684 हो दीस गोंयच्या इतिहासांत कित्याक म्हत्वाचो थारता ?

- (A) गोंयचो व्हाईसराय फ्रान्सिस द ताव्होरान कोंकणी भास उलोवपाची, बरोवपाची, वाचपाची मान्यताय काडून घेतली.  
(B) पोप पायस (पञ्चम) हाणे जो मेरेन कोंकणी भास उलोवपाक, बरोवपाक, वाचपाक येयना, तो मेरेन ख्रिस्ती धर्मिक पदांचेर नियुक्ती करपाक मान्यताय दिवपाक न्हयकार दिलो.  
(C) तिसऱ्या गोंय प्रान्तिक परिशदेन (प्रॉव्हिन्शियल काउन्सिल ऑव्ह गोवा) पांचवें आज्ञापत्र, अधिनियम दोन वरवीं क्रिस्ती धर्मिक प्रश्नोत्तरी आशिल्लो सार-संग्रह आदी पुर्तुगेज भाशेंत आसचो, उपरान्त तो लोकभाशेंत अणकारित करचो अशी आज्ञा प्रसारित केली.  
(D) पांचव्या गोंय प्रान्तिक परिशदेन (प्रॉव्हिन्शियल काउन्सिल ऑव्ह गोवा) तेराव्या आज्ञापत्रा वरवीं जंय पॅरिश प्रिस्टांची संख्या चार आसा, थंयसर एकलो तरी थळावी लोकभास उलोवपाक, बरोवपाक, वाचपाक जाणा जावंक जाय अशें सांगलें.

- (1) (A) only  
(2) (C) only  
(3) (B) only  
(4) (D) only

1[Option ID=17765]  
2[Option ID=17766]  
3[Option ID=17767]  
4[Option ID=17768]

SI. No.93  
QBID:851043

सोळाव्या शेंकड्यांतलो पाद्री तोमास इशतेव्हं आनी एकुणिसाव्या शेंकड्यांतलो पाद्री आग्नेल माफेय हांच्या वावरांत समानकाय आशिल्ली, कारण -

- (A) इशतेव्हान कोंकणी आनी मराठी आत्मसात केल्ली जाल्यार माफेयान संस्कृत, कन्नड, तुळू, मलयालम आनी तमीळ भासांचेर प्रभुत्व संपादिल्लें  
(B) इशतेव्हान 'आर्त-द-लिङ्ग्व कानारी' बरयलें जाल्यार माफेयान 'कोंकणी रानांतलो सोबीत सुन्दर ताळो' ही व्याकरणां वयलीं पुस्तकां बरयलीं  
(C) इशतेव्हान देवनागरी लिपयेंतल्यान जाल्यार माफेयान कन्नड लिपयेंतल्यान कोंकणी बरोवपाचो आग्रो धरिल्लो  
(D) इशतेव्हान कोंकणी पासत रोमी लिपयेची ध्वनिपुराय निर्मणी केली जाल्यार माफेयान इंग्लिश-कोंकणी आनी कोंकणी-इंग्लिश शब्दकोश उजवाडावन हाडलो

- (1) (D) and (A) only  
(2) (B) only  
(3) (A) and (C) only  
(4) (D) only

1[Option ID=17769]  
2[Option ID=17770]  
3[Option ID=17771]  
4[Option ID=17772]

SI. No.94  
QBID:851044

मुखार दिल्ल्या विधानांतली खंयची दोन विधानां परस्परपूरक आसात ?

- (A) दुबावी वर्तमान-भूत-भविश्य वाक्यांत आशिल्ल्या कर्माच्या लिंग-वचनांक मानून मुखेल आनी पालवी क्रियापदां परिवर्तीत जातात.  
(B) आज्ञार्थांत भविश्यकाळांतली कृती अपेक्षित आसता  
(C) कोंकणी विध्यर्थ संस्कृत विध्यर्थाच्याच अर्थान उपकारायतात आनी संस्कृत विध्यर्थाची कुसां लावन कोंकणी विध्यर्थ घडयतात.

- (1) (A) and (B)  
(2) (A) and (C)  
(3) (B) and (C)  
(4) (A), (B) and (C)

1[Option ID=17773]  
2[Option ID=17774]  
3[Option ID=17775]  
4[Option ID=17776]

SI. No.95  
QBID:851045

‘सामासिक उतर’ आनी ‘समास’ म्हळ्यार कितें?

- (A) दोन वो चडावत उतरांचो परस्परां कडेन संबंद दाखोवपी वर्तमानकाळ वो तो वर्तमानकाळ लुप्त जाल्ल्यान एका नवीन उतराची निर्मणी जाता, अशा उतराक ‘सामासिक उतर’ म्हणटात, तेच परी त्या दोन वो चडावत उतरांचो जो संयोग जाता, त्या संयोगाक ‘समास’ अशें संबोधतात.
- (B) दोन वो चडावत उतरांचो परस्परां कडेन संबंद दाखोवपी उतर वो प्रत्यय लुप्त जाल्ल्यान एका नवीन उतराची निर्मणी जाता, अशा उतराक ‘सामासिक उतर’ म्हणटात, तेच परी त्या दोन वो चडावत उतरांचो जो संयोग जाता, त्या संयोगाक ‘समास’ अशें संबोधतात.
- (C) दोन वो चडावत उतरांचो परस्परां कडेन संबंद दाखोवपी भूतकाळ वो तें उतर लुप्त जाल्ल्यान एका नवीन उतराची निर्मणी जाता, अशा उतराक ‘सामासिक उतर’ म्हणटात, तेच परी त्या दोन वो चडावत उतरांचो जो संयोग जाता, त्या संयोगाक ‘समास’ अशें संबोधतात.
- (D) दोन वो चडावत उतरांचो परस्परां कडेन संबंद दाखोवपी वर्तमानकाळ वो तें उतर लुप्त जाल्ल्यान एका नवीन उतराची निर्मणी जाता, अशा उतराक ‘सामासिक उतर’ म्हणटात, तेच परी त्या दोन वो चडावत उतरांचो जो संयोग जाता, त्या संयोगाक ‘समास’ अशें संबोधतात.

(1) (C) only

(2) (B) only

(3) (A) and (C) only

(4) (B) and (D) only

1[Option ID=17777]

2[Option ID=17778]

3[Option ID=17779]

4[Option ID=17780]

Sl. No.96

QBID:851046

आदर्श विज्ञापन (एँडव्हर्टायज) लेखनांत मुखार दिल्यात, तातूंतल्यो खंयच्यो विशेशतायो आसूंक फाव ना ?

- (A) विज्ञापन नकसूद उतरांनी आसूंक जाय परन्त तीं आकर्शक आसूंक फाव ना.
- (B) विज्ञापनांत गुणवत्तेची नकसूद म्हायती दिवपाचो जाता तितलो येल्ल जावंक जाय
- (C) विज्ञापनांतलीं आकर्शक चित्रां पळोवन वाचप्यांच्यो वो पळोवप्यांच्यो विकृत भावना चाळोवन घालूंक जाय
- (D) विज्ञापनांत संपर्क नामो, मोबायल क्रमांक आनी ई-मेल आयडी दिवंकच जाय अशें नासता.

(1) (A) and (C) only

(2) (A) and (D) only

(3) (B) and (C) only

(4) (B) and (D) only

1[Option ID=17781]

2[Option ID=17782]

3[Option ID=17783]

4[Option ID=17784]

Sl. No.97

QBID:851047

ज्येष्ठ कवी पाण्डुरंग भांगी हांका मनोहराय सरदेसायान ‘द पेण्टर ऑव्ह द इन्व्हिजिबल’ अशें म्हळें, कारण तांचें म्हणणे अशें आशिल्लें-

- (A) भांगी हे एक चित्रकार आसात आनी चित्रां वरवीं कवितांचो प्रत्यय हाडून दितात.
- (B) भांगी भितल्ल्या मनाचे रुपडें रंगयतात आनी ताचे पासत संवसाराचे भायले वटेनच्यो प्रतिमा घेतात.
- (C) भांगींतलो कवी अदृष्ट अशा अन्तर्मनाक चित्ररूप दिता, ताचे पासत बहिर्मुख जावन संवसारांतली प्रतिकां घेता.
- (D) भांगींतलो कवी कोणाक दिसना कारण ते चित्रकार जावन आसात

(1) (A) only

(2) (A) and (B) only

(3) (C) only

(4) (C) and (D) only

1[Option ID=17785]

2[Option ID=17786]

3[Option ID=17787]

4[Option ID=17788]

Sl. No.98

QBID:851048



भौ. हरिश्चंद्र नागवेकार हांच्या मतान -

- (A) पुंडलीक नायक हो कोंकणी साहित्य संवसारांतलो एक चमत्कार आसा.
- (B) 'कामेलीन' ह्या नवलकाणयेच्या प्रास्तविक, प्रकरणातल्यान पुराय कथानक दामोदर मावजो हांणी बरोवन दवरलां
- (C) 'कामेलीन' नवलकाणयेत कांयच दोश दिश्टी पडनात.
- (D) तंत्राच्या नदरेन जिका कथा म्हणू येता अशी कथा कोंकणीत फळ्ळी, ती मुक्तीउप्रांत
- (E) मुक्तीउप्रांतच्या काळांत कोंकणीकथा रचनेच्या दृश्टीन प्रमाणशीर जाल्याचें दिश्टी पडटा.

Choose the most appropriate answer from the options given below :

- (1) (A), (B) and (C) only
- (2) (A), (D) and (E) only
- (3) (B), (C) and (D) only
- (4) (A), (C) and (E) only

1[Option ID=17789]

2[Option ID=17790]

3[Option ID=17791]

4[Option ID=17792]

Sl. No.99

QBID:851049

कवितेच्यो खाशेलतायो म्हळ्यार

- (A) कवितेचें एक शास्त्र आसता
- (B) गद्य कविता ही मुक्तछंदात आसता
- (C) कवितेची भास जड तर कविता मोलाची
- (D) मुक्तछंदातल्या कवितेक लय नासता
- (E) छंद रूप हो एक खेळ आसूं येता. पूण कविता बरोवप म्हळ्यार खेळ न्हय

सकल दिल्ल्या पर्यायातलो योग्य पर्याय वेचात.

- (1) (A) आनी (B)
- (2) (B) आनी (C)
- (3) (B) आनी (D)
- (4) (A) आनी (E)

1[Option ID=17793]

2[Option ID=17794]

3[Option ID=17795]

4[Option ID=17796]

Sl. No.100

QBID:851050

डॉ. प्रकाश वजरीकार हांच्या मतान कवी सुदेश लोटलीकार हांच्या 'एकांताचीं उतरां' ह्या कविता झेल्यातल्यो कविता म्हळ्यार...

- (A) स्वतःचो घेतिल्लो सोद
- (B) सामाजिक, राजकीय, इतिहासिक संदर्भ दिवपी कविता
- (C) एका साक्षात्कारी मनशाचें आपउलोवप
- (D) कविच्या भाग्याचें फळ
- (E) अस्तित्ववादी कवितेचो एक रूपकार

सकल दिल्या पर्यायातलो योग्य पर्याय वेचात.

- (1) (A) आनी (C)
- (2) (B) आनी (D)
- (3) (B), (C) आनी (E)
- (4) (A), (D) आनी (E)

1[Option ID=17797]

2[Option ID=17798]

3[Option ID=17799]

4[Option ID=17800]

Sl. No.101  
QBID:851051

निबंद बरपाचो विकास असो सांगू येता \_\_\_\_\_

- (A) प्राचीन काळांत निबंद हे उतर साहित्यिक नजरेतल्यान वापरी नाशिल्ले
- (B) 'वासवदत्ता' रचपी सुबन्धु हांणे निबंद ह्या उतराचो वापर ग्रंथ रचना असो केला
- (C) फ्रेंच भाशेन मॉन्तेन हांणी हो प्रकार केळयला
- (D) भारतांत निबंद बरप जाय तशें बरयल्ले दिश्टी पडना
- (E) 1865 त भारतातल्या विद्यापिठांत अभ्यासक्रमांत निबंद विशय शिकय नाशिल्ले

सकल दिल्या पर्यायातलो योग्य पर्याय वेचात.

- (1) (A), (B) आनी (D)
- (2) (B) आनी (C)
- (3) (B), (C) आनी (E)
- (4) (C) आनी (D)

1[Option ID=17801]  
2[Option ID=17802]  
3[Option ID=17803]  
4[Option ID=17804]

Sl. No.102  
QBID:851052

कोंकणी साहित्यात भोंवडेवर्णनाचें निबंद साहित्य अशें वर्णन करूं येता \_\_\_\_\_

- (A) भोंवडेवर्णन म्हणजे बरोवप्याचें अणभवविश्व
- (B) भोंवडेवर्णन हो स्वतंत्र साहित्य प्रकार आसा
- (C) कोंकणी साहित्यांत भोंवडेवर्णनाचें बरप निबंद आनी पुस्तकरूपान मेळता
- (D) बरे भोंवडेवर्णन बरवपी हो भाशेचेर प्रभुत्व आसपीच जाय अशें ना
- (E) भोंवडेवर्णनात संवाद आसल्यार त्या बरपाची सोबा वाडता

सकल दिल्या पर्यायातलो योग्य पर्याय वेचात.

- (1) (A), (B) आनी (C)
- (2) (C), (D) आनी (E)
- (3) (A), (C) आनी (E)
- (4) (B), (C) आनी (D)

1[Option ID=17805]  
2[Option ID=17806]  
3[Option ID=17807]  
4[Option ID=17808]

Sl. No.103  
QBID:851053

कोंकणी साहित्यातले जीण आनी आपजीण चित्रावपी बरप म्हळ्यार \_\_\_\_\_

- (A) 'भुंयचाफ्री' ह्या व्यक्ती चित्राच्या बरपात वट्ट धा चित्रणां अस्तुन्यांची आसपाक जाय
- (B) 'अस्तुरीमूग' ह्या व्यक्ती चित्रणा सारख्या बरपातल्यान पयल्या इकरा निबंदानी बायलांची चित्रणां आसप.
- (C) 'दोंगरावेलीं मनशां' ह्या व्यक्तीचित्रांच्या निबंध झोल्यात बिगर गोंयकारांचें चित्रण येवप.
- (D) 'पांथस्थ' ह्या आपजीणेच्या बरपात विस्तृत आत्मचरित्रच नासप.
- (E) 'खबरी...' ह्या व्यक्ती चित्राच्या बरपांत गोंयकारांची खाशेली चित्रणां आसप.

सकल दिल्या पर्यायातलो योग्य पर्याय वेचात.

- (1) (A), (B) आनी (C)
- (2) (C), (D) आनी (E)
- (3) (B), (C) आनी (D)
- (4) (A), (D) आनी (E)

1[Option ID=17809]  
2[Option ID=17810]  
3[Option ID=17811]  
4[Option ID=17812]

Sl. No.104  
QBID:851054

रवींद्र केळेकार हांचे निबंद लेखन म्हळ्यार \_\_\_\_\_

- (A) आपल्या निबंदातल्यान तांची राजकी, सामाजिक, भाशीक जीण हाचें चित्रण घडोवप.
- (B) रवींद्रबाब हांणी कोंकणी निबंद लेखनाक प्रतिष्ठा मेळोवन दिली.
- (C) तांणी आपल्या निबंदातल्यान फक्त तत्वगिज्ञानच मांडपाची कृती केली.
- (D) तांच्या ह्या बरपाक “अणभवाचें वालीक आयिल्ली चिंतनाचीं फुलां” अशें म्हणू येता.
- (E) रवींद्रबाबान कोंकणी निबंदाची सुरवात केली.

सकल दिल्या पर्यायातलो योग्य पर्याय वेचात.

- (1) (A), (B) आनी (C)
- (2) (C), (D) आनी (E)
- (3) (A), (B) आनी (D)
- (4) (B), (C) आनी (E)

1[Option ID=17813]  
2[Option ID=17814]  
3[Option ID=17815]  
4[Option ID=17816]

Sl. No.105  
QBID:851055

कॅशियस लॉञ्जायनस ह्या प्राचीन ग्रीक विचारवन्तान बरयिल्ल्या ‘पेरी हिप्सुस’ ह्या ग्रंथाचो अर्थ ‘भव्योदात्त संबंदान’ असो घेवंक जाता, कारण-

- (A) 1739 विलियम स्मिथ हाणे त्या माथाळ्याचो अणकार ‘ऑन द सब्लायम’ असो केला.
- (B) ह्या माथाळ्या वरवीं कले परस कलात्मकताय श्रेष्ठ असो हेत स्पश्ट जाता.
- (C) कॅशियस लॉञ्जायनसाक श्रेष्ठ चिंतन, उदात्त भावना, प्रभावी शैली असो अर्थ अभिप्रेत आशिल्लो.
- (D) ‘पेरी हिप्सुस’ हो गंथ ऍरिस्टॉटलच्या ‘पोएटिक्स’ परसय भव्य आनी उदात्त विचारांचो आसा.

Choose the correct answer from the options given below :

- (1) (B) only
- (2) (A) and (B) only
- (3) (C) only
- (4) (C) and (D) only

1[Option ID=17817]  
2[Option ID=17818]  
3[Option ID=17819]  
4[Option ID=17820]

Sl. No.106  
QBID:851056

मार्क्सवाद हो साहित्यसिद्धान्त न्हय, अशें म्हणपाचें कारण \_\_\_\_\_

- (A) मार्क्सवाद साहित्यकृतीच्या गुणवते विशीं कांयच सांगूंक पावना.
- (B) मनशाचे जिणेक निखट्यो आर्थिक प्रेरणा आसता अशें म्हणप समा न्हय
- (C) मनशाची जीण म्हळ्यार निखटो वर्गसंघर्ष अशें म्हणप अर्थपुराय दिसना.
- (D) जिणेविशींचो दृष्टिकोन म्हळ्यार मार्क्सवादी दृष्टिकोन, अशें म्हणप समा न्हय

Choose the correct answer from the options given below :

- (1) (A) only
- (2) (B) and (C) only
- (3) (D) only
- (4) (C) and (D) only

1[Option ID=17821]  
2[Option ID=17822]  
3[Option ID=17823]  
4[Option ID=17824]

Sl. No.107  
QBID:851057



कोंकणी कवितेविशी जाणकारांचें अशें मत आसा.

- (A) खंयच्याय साहित्याक पयलोवयलो चंवर येता तो काव्याचो. तसोच तो गोंयात कोंकणी कवितेक आयलो.
- (B) गोंयात पोर्तुगेज येवच्या आदींय कोंकणीत काव्य रचपाची परंपरा आसली.
- (C) गोंयच्या मांडो, दुल्पदा ह्या लोकगीतांनी सुर्बुस काव्य शिंपडला.
- (D) राम मनोहर लोहिया हांच्या प्रेरणेन कोंकणी कविता गोंयभर फुलून आयली.
- (E) केरळांत कोंकणी कवितेक चंवर आयलो.

सकल दिल्या पर्यायातलो योग्य पर्याय वेचात.

- (1) (A), (C) आनी (D)
- (2) (A), (B) आनी (C)
- (3) (B), (C) आनी (D)
- (4) (C), (D) आनी (E)

1[Option ID=17825]

2[Option ID=17826]

3[Option ID=17827]

4[Option ID=17828]

Sl. No.108

QBID:851058

तुळात्मक साहित्याभ्यासांत महत्व लाबिल्ल्या 'प्रभाव' (influence) आनी 'सहजसाम्य' (analogy) ह्या दोन संज्ञांत भौच वेगळेपण आसता, कारण -

- (A) सहजसाम्य म्हळ्यार, उदाहरण म्हूण भासाभास करूंक घेतिल्ल्या दोन साहित्यकृतींचो एकमेका कडेन कसलोच संबंद नासता, अशें आसूनय तांची शैली, रचनाशिल्प, मनःस्थिती, कल्पना हातूंत आशिल्लें साम्य मात सहजपणान स्पश्ट करूंक मेळटा, अशें ए. ऑवेन ऍल्डरिज म्हणटा;
- (B) एकाद्री साहित्यकृती हेर एकाद्रया साहित्यकृतीचे निर्मणेक प्रभाव पडपा इतली 'कारण' जाता (म्हळ्यार साम्यां दाखयता अशें) म्हणपा सारकें कोणच वाङ्मयीन आधार दाखोवन आपणालो युक्तिवाद सिद्ध करूंक पावलो ना, अशें रेने वेले म्हणटा;
- (C) प्रभाव आनी सहजसाम्य हांचो अभ्यास करपाक तार्किक भूंय उपलब्ध जाता, अशें एस्. एस्. प्रावर म्हणटा;
- (D) साहित्यक आनी साहित्य एकमेकाचेर कसो प्रभाव घालतात, हें अभ्यासपा पासत सुक्षीम सविस्तर सुत्रां मेरेन वचूंक ह्यो दोन संज्ञा साह्य करतात, अशें सायमन ज्यून म्हणटा.

Choose the correct answer from the options given below :

- (1) (A) only
- (2) (B) only
- (3) (C) only
- (4) (D) only

1[Option ID=17829]

2[Option ID=17830]

3[Option ID=17831]

4[Option ID=17832]

Sl. No.109

QBID:851059

संपर्क आनी स्थलान्तर हांचो प्रभाव संबंदितांचे साहित्य निर्मणेचेर जाता, हाची देख म्हळ्यार -

- (A) इङ्क्विजिशनची भिरांत घेऊन मंगळूर वो भारताच्या हेर वाठारांत स्थलान्तरित जाल्ले एकवटीत सुशिक्षित गोंयकार;
- (B) भारतांतल्या तमिळ लेखकांचें आनी श्रीलंकेंतल्या तमिळ बरोवप्यांचे साहित्य;
- (C) कोलम्बसान मार्च 14, 1493त स्पेन देशांत पर्थून येतकच ताका दुडवाची पुरवण करपी राजा फर्डिनण्ड आनी राणी इजाबेल हांचे कडेन संपर्क सादून आपणे अमेरिकेचो सोद लायिल्ल्या विशांचो धाडिल्लो अहवाल;
- (D) पुर्तुगिजांनी संवसारांतल्या विंगड विंगड धर्मान्तरितांक शिकयिल्ली रोमी लिपींतली थळावी भास.

Choose the correct answer from the options given below :

- (1) (A) and (B) only
- (2) (B) only
- (3) (C) and (D) only
- (4) (D) only

1[Option ID=17833]

2[Option ID=17834]

3[Option ID=17835]

4[Option ID=17836]

Sl. No.110  
QBID:851060

ललित निबंदाची भास \_\_\_\_\_

- (A) भावना आनी विचार नितळपणान प्रगट करपी आसची
- (B) खेळगड्याची उमेद आनी गोडी प्रगट करपी आसची.
- (C) सदाचें उलोवप प्रगट करपी आसची.
- (D) अलंकार प्रगट करपी आसची.
- (E) पुराय भास संवाद प्रगट करपी आसची.

सकल दिल्या पर्यायातलो योग्य पर्याय वेचात.

(1) (A), (B) आनी (C)

(2) (C), (D) आनी (E)

(3) (A), (C) आनी (D)

(4) (B), (D) आनी (E)

1[Option ID=17837]  
2[Option ID=17838]  
3[Option ID=17839]  
4[Option ID=17840]

Sl. No.111  
QBID:851061

प्रकाश वझरीकाराच्या मतान अशोक कामतीची 'घाणाघाय नियतीचे' ही कादंबरी म्हळ्यार \_\_\_\_\_

- (A) अर्विल्ल्या कोंकणी कादंबरी चें मुळावण घालपी साहित्य रचना.
- (B) एका सभ्य पुण गरीब मनशाच्या जीणेत जाल्ली पडझड दाखोवपी रचनाकृती.
- (C) व्हड असो जिवीताचो पट दाखोवपी सामाजिक संदर्भ आशिल्ली कादंबरी.
- (D) अर्थीक कुचंबणा आसूनय भुरग्यांचेर न जावपी परिणाम दाखोवपी कथानक.
- (E) गोंयच्या समाजांतल्या प्रतिष्ठित घराब्याची हासती खेळटी काणी.

Choose the most appropriate answer from the options given below :

(1) (A) and (B) only

(2) (E) and (D) only

(3) (B) and (C) only

(4) (A) and (D) only

1[Option ID=17841]  
2[Option ID=17842]  
3[Option ID=17843]  
4[Option ID=17844]

Sl. No.112  
QBID:851062

गोंयच्या कुळंबी जमातीतले लोक जायत्या धार्मिक कार्याखातीर करमलाच्या पानांचो उपेग करतात \_\_\_\_\_

- (A) तांच्या पारंपारिक वसतींनी करमलाचो रुख सहज उपलब्ध आसता
- (B) हेर जमातीपरस आपुण वेगळे हें दाखोवपाखातीर ते तशे करतात.
- (C) कुळंबी लोक चडशे रानावनांत रावतात. थंय तांकां शारी लोकांभशेन वागप जमना
- (D) घरचे गरीब परिस्थितीक लागून तांकां धातूची आयदनां परवडनात.
- (E) कुळंबी लोक भश्ट-सोवळें खूप मानतात.

Choose the correct answer from the options given below :

(1) (B) only

(2) (C) only

(3) (D) only

(4) (A) only

1[Option ID=17845]  
2[Option ID=17846]  
3[Option ID=17847]  
4[Option ID=17848]

Sl. No.113  
QBID:851063

‘नाटक’ ह्या साहित्यप्रकाशविशीं अशें म्हणूं येता.

- (A) नाटक हो एक दृक आनी श्राव्य प्रकार आसा.
- (B) नट हें संस्कृत उतर मुळांत संस्कृतातलेंच जावन आसा.
- (C) नाटकांत फकत मनोरंजन आसता .
- (D) नाटक हाचो मूळ अर्थ अभिनय करप असो आसा.
- (E) संस्कृत वाङ्मयांत नाटकाक पंचमवेद लेखला.

Choose the correct answer from the options given below :

- (1) (A), (B) and (C) only
- (2) (B), (D) and (E) only
- (3) (A), (D) and (E) only
- (4) (B), (C) and (D) only

1[Option ID=17849]  
2[Option ID=17850]  
3[Option ID=17851]  
4[Option ID=17852]

Sl. No.114  
QBID:851064

दामोदर मावजो कोंकणी कथेच्या संबंदान आपली निरीक्षणां अशी सांगतात...

- (A) चंद्रकांत केणी हांची कोंकणी कथा मोटव्या आकाराची आसता.
- (B) दत्ता नायक हांगेली शब्दचित्रां खाशेलेपणान उबीं जायनात.
- (C) अ.ना. म्हांबरो हांची कथा अ-कथा ह्या प्रकारांत मोडटा.
- (D) गजानन जोग आनी महाबळेश्वर सैल हे दोगूय कोंकणी कथेच्या क्षितिजाचेर स्वयंभू तेजान तळपुपी सूर्या जावन आसात.
- (E) ‘दोंगर चंवड्या’ कथाझोल्यांतल्यो कथा भावुक शैलीपरस विनोदी शैलींत बरयल्यात.

Choose the most appropriate answer from the options given below :

- (1) (A), (C) and (D) only
- (2) (A), (B) and (E) only
- (3) (B), (C) and (E) only
- (4) (C), (D) and (E) only

1[Option ID=17853]  
2[Option ID=17854]  
3[Option ID=17855]  
4[Option ID=17856]

Sl. No.115  
QBID:851065

सोळाव्या आनी सतराव्या शेंकड्यांत मिशनरी पाद्री कडल्यान कोंकणी भाशेचो व्याकरणाच्या मळार व्हड वावर जालो

- (A) मिशनरींक भाशेचो वावर करपाच्या बदल्यांत पयशे मेळटाले
- (B) मिशनरींक भाशेचो वावर करना जाल्यार जबर ख्यास्त जाताली
- (C) मिशनरींनी भाशेचो वावर केल्ल्यान तांका पुर्तुगालाक वचूंक मेळटालें
- (D) मिशनरींनी भाशेचो वावर केल्यार तांका धर्माच्या प्रसारा पासत थळावी भास शिकप सोपें जातालें

Choose the most appropriate answer from the options given below :

- (1) (A) only
- (2) (B) only
- (3) (C) only
- (4) (D) only

1[Option ID=17857]  
2[Option ID=17858]



3[Option ID=17859]  
4[Option ID=17860]

Sl. No.116  
QBID:851066

मोनजात कशी उलयता हे सांगपी तिचे कृती कडेन अर्थपुरास संबंद लावन जोडयो लायात :

List - I

List - II

- |                          |                       |
|--------------------------|-----------------------|
| (A) कुल्ली दांगे हालोवन  | (I) गावन उलयता        |
| (B) म्होंवा मूस मोन्यानी | (II) किळच्यांनी उलयता |
| (C) कोगूळ                | (III) साद घालून उलयता |
| (D) माकड                 | (IV) नाचून उलयता      |
|                          | (V) कुरवांनी उलयता    |

- (1) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(V)  
(2) (A)-(V), (B)-(IV), (C)-(III), (D)-(II)  
(3) (A)-(III), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(V)  
(4) (A)-(V), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(II)

1[Option ID=17861]  
2[Option ID=17862]  
3[Option ID=17863]  
4[Option ID=17864]

Sl. No.117  
QBID:851067

भाशेचें प्रमाणिकरण आनी तें करता आसतना जाय आशिल्लयो अनिवार्य कृती हांच्यो सार्थक जोडयो लायात :

List - I

List - II

- |   |   |
|---|---|
| (A) भाशेचें प्रमाणिकरण करपा पासत              | (I) संबंदीत बोलयेचें व्याकरण, शब्दकोश सिद्ध करचे पडटात              |
| (B) भाशेचें प्रमाणिकरण समृद्ध करपा पासत       | (II) ते भाशेची एक तरी बोली वेंचून काडची पडटा                        |
| (C) भाशेच्या प्रमाणिकरणाची बांदावळ करता आसतना | (III) विंगड विंगड भाशीक वेवस्था जल्माक घालच्यो पडटात.               |
| (D) सावथवर्थ बरयता - प्रमाण भाशेची जाणविकाय   | (IV) उश्णी उतरावळ तेच परी नीज भाशेंतली उतरावळ बांदावळेंत हाडची पडटा |
|   | (V) अठराव्या शेंकड्या मेरेन येवरोपांत जल्मूंकच नाशिल्ली             |

- (1) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(V)  
(2) (A)-(V), (B)-(IV), (C)-(III), (D)-(II)  
(3) (A)-(III), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(V)  
(4) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(V)

1[Option ID=17865]  
2[Option ID=17866]  
3[Option ID=17867]  
4[Option ID=17868]

Sl. No.118  
QBID:851068

मुखार दिल्ले स्वर आनी तांचे उच्चारण हांच्यो सार्थक जोडयो लायात:

List - I

List - II

- |   |                 |
|---|-----------------|
| (A) 'अ'चो निजाचो उच्चार                 | (I) कर, गर      |
| (B) 'अ'चो ओडिल्लो आंखूड उच्चार          | (II) अनस, अन्न  |
| (C) 'अ'चो ओडिल्लो मात्सो लांबोडो उच्चार | (III) पणस, अशीर |
| (D) 'ए'चो निजाचो उच्चार                 | (IV) कॅर, पॅर   |
|   | (V) केळ, खेळ    |

- (1) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(V)  
 (2) (A)-(V), (B)-(IV), (C)-(III), (D)-(II)  
 (3) (A)-(III), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(V)  
 (4) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(V)

1[Option ID=17869]  
 2[Option ID=17870]  
 3[Option ID=17871]  
 4[Option ID=17872]

Sl. No.119  
 QBID:851069

कोंकणी व्याकरणाची पुस्तकां आनी तांचे कर्ते हांच्यो सार्थक जोडयो लायात:

List - I

- (A) कोंकणी व्याकरण  
 (B) लेट अस लर्न कोंकणी  
 (C) म्हाका होलमल्ली कोंकणी भास  
 (D) अ कोंकणी ग्रॅमर

List - II

- (I) एस्. जे. बोरकर  
 (II) सुरेश रामचन्द्र पै  
 (III) आञ्जेलुस फ्रान्सीस शाविएर माफे  
 (IV) पाद्री तोमास इश्तेव्हं  
 (V) आर्. के. राव

- (1) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(V)  
 (2) (A)-(V), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(III)  
 (3) (A)-(IV), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(V)  
 (4) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(III)

1[Option ID=17873]  
 2[Option ID=17874]  
 3[Option ID=17875]  
 4[Option ID=17876]

Sl. No.120  
 QBID:851070

कोंकणी व्याकरणांत आशिल्ल्यो संज्ञा आनी तांचे उपयोजन करपी माध्यमां हांच्यो सार्थक जोडयो लायात:

List - I

- (A) गुण विशेषणां  
 (B) धन विशेषणां  
 (C) क्रियाविशेषणांकूय लागतात  
 (D) सटवी विभक्ती

List - II

- (I) 'गेलो' हें कूस संस्कृत 'अक् + इन्'कुसां लावन जालां  
 (II) 'लो' कूस लावन थळ आनी काळ दाखयतली अव्ययांची रूपां कोंकणीत घोळटात.  
 (III) कोंकणीत हे विभक्तीची दोन तरांतलीं रूपां घोळटात.  
 (IV) सून, थावन, थान, च्यान, साकून, थाकून हीं अव्ययां.  
 (V) सर्वनामां साकून जातात.

- (1) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(V)  
 (2) (A)-(III), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(IV)  
 (3) (A)-(IV), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(V)  
 (4) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(III)

1[Option ID=17877]  
 2[Option ID=17878]  
 3[Option ID=17879]  
 4[Option ID=17880]

Sl. No.121  
 QBID:851071

कोंकणीतले चरित्र-लेखन आनी संबधित चरित्रकार हांच्यो सार्थक जोडयो लायात: आनी योग्य पर्याय वेंचात.

List - I

- (A) मीरा:जीवन आनी कवन  
 (B) र.वि. पण्डित:जीवित आनी वावर  
 (C) पुण्यात्मो राम कामती:एक दुखेस्त इतिहासीक जीण  
 (D) अशे आशिल्ले राजाजी

List - II

- (I) सु. म. तडकोडकार  
 (II) शरच्चन्द्र शेणय  
 (III) शणै गोंयबाब  
 (IV) हरिश्चन्द्र नागवेंकार  
 (V) शैलेशचन्द्र रायकार

- (1) (A)-(I), (B)-(IV), (C)-(III), (D)-(II)  
 (2) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(III), (D)-(V)  
 (3) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(II)  
 (4) (A)-(V), (B)-(IV), (C)-(III), (D)-(I)

1[Option ID=17881]  
 2[Option ID=17882]  
 3[Option ID=17883]  
 4[Option ID=17884]

Sl. No.122  
 QBID:851072

Match List I with List II :

कविता झेले आनी तांचे उजवाडणी वर्स हांच्यो फावो त्यो जोडयो लायात. आनी योग्य पर्याय वेंचात.

List - I	List - II
(A) गांठी - युस्फ अ. शेख	(I) 1984
(B) निरांजन - राम बा. प्रभु चोडणेकार	(II) 1988
(C) पर्जळाचें दार - माधव बोरकार	(III) 1982
(D) औदुंबर - रामकृष्ण जुवारकार	(IV) 1986

- (1) (A)-(II), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(III)  
 (2) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(II)  
 (3) (A)-(IV), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(II)  
 (4) (A)-(III), (B)-(I), (C)-(IV), (D)-(II)

1[Option ID=17885]  
 2[Option ID=17886]  
 3[Option ID=17887]  
 4[Option ID=17888]

Sl. No.123  
 QBID:851073

कवितेच्यो वळी आनी ती कविता बरोवपी कवी हांच्यो फावो त्यो जोडयो लायात. आनी सकयल्या पर्यायातलो योग्यपर्याय वेंचात.

List - I	List - II
(A) तुवें दाखयलो बुडपाचो खीण स्मरणात गच्च जीणेचेय रीण	(I) र. वि. पंडित
(B) हजारांनी आसा पती तरीय म्हजी माती पतिव्रता	(II) वामन सरदेसाय
(C) तो कृष्ण ही राधा तें प्रेम ही प्रेमाची बाधा	(III) सु. म. तडकोड
(D) नाका बा दोळ्यांत दुकां नाका गे दुकां, नमली तुका आज लक्ष लक्ष मस्तकां	(IV) रमेश भगवंत वेळूस्कार

- (1) (A)-(III), (B)-(IV), (C)-(I), (D)-(II)  
 (2) (A)-(II), (B)-(III), (C)-(I), (D)-(IV)  
 (3) (A)-(IV), (B)-(II), (C)-(III), (D)-(I)  
 (4) (A)-(IV), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(III)

1[Option ID=17889]  
 2[Option ID=17890]  
 3[Option ID=17891]  
 4[Option ID=17892]

Sl. No.124  
 QBID:851074



कोंकणींतले एकांकीकार आनी तांची एकांकी हांच्यो यथोचित, सार्थक जोड्यो लायात:

List - I

- (A) सु. म. तडकोड
- (B) राजू नायक
- (C) रामदास नायक
- (D) विजय थळी

List - II

- (I) चित्रांतलें घर
- (II) कावळे
- (III) कॅस्केड
- (IV) भाटकाराचो कान
- (V) कांसुलो

- (1) (A)-(III), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(IV)
- (2) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(III), (D)-(V)
- (3) (A)-(II), (B)-(I), (C)-(III), (D)-(V)
- (4) (A)-(V), (B)-(IV), (C)-(II), (D)-(I)

1[Option ID=17893]

2[Option ID=17894]

3[Option ID=17895]

4[Option ID=17896]

Sl. No.125

QBID:851075

तियात्र आनी तियात्रीस्त हांच्यो यथोचित, सार्थक जोड्यो लायात:

List - I

- (A) कांटेच कांटे
- (B) शंबू पसरकार
- (C) भाड्याचो कुसवो
- (D) भाटकारा

List - II

- (I) फ्रेडी जे. द कॉरता
- (II) मारियो मिनीनो आरावजो
- (III) तोमाजिन्दु कार्दोज
- (IV) आगोस्तीन मस्कारन्हेयश
- (V) जुवांच आगोस्तीन फेर्नान्दीश

- (1) (A)-(III), (B)-(I), (C)-(II), (D)-(V)
- (2) (A)-(V), (B)-(IV), (C)-(III), (D)-(II)
- (3) (A)-(V), (B)-(IV), (C)-(III), (D)-(II)
- (4) (A)-(V), (B)-(IV), (C)-(II), (D)-(I)

1[Option ID=17897]

2[Option ID=17898]

3[Option ID=17899]

4[Option ID=17900]

Sl. No.126

QBID:851076

कोंकणी भाशेचे चळवळींत संघर्शा पासत स्थापन जाल्ल्या संस्थाचो सार्थक क्रम खंयचो?

- (1) गोवा कोंकणी अकादमीची स्थापणूक, कारवारांत कोंकणी भाशा मण्डळाची स्थापना. गोंयांत कोंकणी प्रजेचो आवाज, केळांत कोंकणी भाशा प्रचार सभा.
- (2) कारवारांत कोंकणी भाशा मंडळाची स्थापना, केरळांत कोंकणी भाशा प्रचार सभा, गोंयांत कोंकणी प्रजेचो आवाज, गोवा कोंकणी अकादमीची स्थापणूक.
- (3) गोवा कोंकणी अकादमीची स्थापणूक, कारवारांत भाशा मंडळाची स्थापना, केरळांत कोंकणी भाशा प्रचार सभा, गोंयांत कोंकणी प्रजेचो आवाज.
- (4) गोंयांत कोंकणी प्रजेचो आवाज, गोवा कोंकणी अकादमीची स्थापणूक, कारवारांत कोंकणी भाशा मंडळाची स्थापना, केरळांत भाशा प्रचार सभा.

1[Option ID=17901]

2[Option ID=17902]

3[Option ID=17903]

4[Option ID=17904]

Sl. No.127

QBID:851077

बोली ते प्रमाणभास ह्या कोंकणीच्या प्रवासांतल्या पेण्यांच्यो सार्थक क्रम खंयचो ?

- (A) सुनितीकुमार चॅटर्जी समितीच्या अहवालाचो साहित्य अकादेमी वरवी स्वीकार
- (B) भारतीय संविधानाचे आठवे अनुसूचित वळेरींत कोंकणी भाशेचो आस्पाव
- (C) गोंयांतल्या लोकांचो- जनमत कौल
- (D) पुराय गोंय राज्याची कोंकणी राज्यभास

(1) (C), (D), (A), (B)

(2) (A), (B), (C), (D)

(3) (A), (C), (D), (B)

(4) (A), (D), (C), (B)

1[Option ID=17905]

2[Option ID=17906]

3[Option ID=17907]

4[Option ID=17908]

Sl. No.128

QBID:851078

मुखार दिल्ल्या संस्कृत उतरांच्या आदाराचेर निम्बून निर्मणी जाल्ल्या मुळाव्या कोंकणी उतरांचो अनुक्रम लायात:

कृतम, मृतम, पुत्रः, गतः भार्या अगत, घोटकः, अगतः

- (1) केलें, मेलें, पूत, गेलो, बायल, आयलो, घोडो, आयलो
- (2) घोडो, आयलो, केलें, मेलें, पूत, गेलो, बायल, आयलो
- (3) बायल, आयलो, घोडो, आयलो, केलें, मेलें, पूत, गेलो
- (4) पूत, गेलो, बायल, आयलो, घोडो, आयलो, केलें, मेलें

1[Option ID=17909]

2[Option ID=17910]

3[Option ID=17911]

4[Option ID=17912]

Sl. No.129

QBID:851079

मुखार दिल्ल्या प्रकाश पाडगांवकार हांच्या कविता झेल्यांच्या उजवाडणे वर्सांचो यथोचित अनुक्रम लायात:

- (1) वास्कोयन, हांव मनीस अश्यत्थामो, व्हांवती न्हंय काळाची, उजवाडाचीं पावलां
- (2) उजवाडाचीं पावलां, वास्कोयन, हांव मनीस अश्यत्थामो, व्हांवती न्हंय काळाची
- (3) व्हांवती न्हंय काळाची, उजवाडाचीं पावलां, वास्कोयन, हांव मनीस अश्यत्थामो
- (4) उजवाडाचीं पावलां, वास्कोयन, व्हांवती न्हंय काळाची, हांव मनीस अश्यत्थामो

1[Option ID=17913]

2[Option ID=17914]

3[Option ID=17915]

4[Option ID=17916]

Sl. No.130

QBID:851080

मुखार दिल्ल्या निबंद झेल्यांच्या वर्सांचो यथोचित अनुक्रम लायात:

- (1) वळेसर, मान्नी पुनव, गोंयची अस्मिताय, बिम्बां पडबिम्बां
- (2) गोंयची अस्मिताय, बिम्बां पडबिम्बां, वळेसर, मान्नी पुनव,
- (3) मान्नी पुनव, गोंयची अस्मिताय, बिम्बां पडबिम्बां, वळेसर
- (4) गोंयची अस्मिताय, बिम्बां पडबिम्बां, वळेसर, मान्नी पुनव

1[Option ID=17917]

2[Option ID=17918]

3[Option ID=17919]

4[Option ID=17920]

Sl. No.131

QBID:851081

साहित्य अकादमी पुरस्कार फावो जाल्या कविता झेल्यांचे वर्साप्रमाण क्रम लायात:

- (A) भितरलें तुफान
- (B) सोंशाचें कान
- (C) निळें निळें ब्रह्म
- (D) सासाय
- (E) वंशकुळाचें देणें

सकल दिल्या पर्यायातलो योग्य पर्याय वेचात

- (1) (E), (C), (A), (D), (B)
- (2) (A), (D), (C), (B), (E)
- (3) (D), (A), (B), (E), (C)
- (4) (B), (E), (D), (A), (C)

1[Option ID=17921]  
2[Option ID=17922]  
3[Option ID=17923]  
4[Option ID=17924]

Sl. No.132  
QBID:851082

कविता झेल्यांच्या उजवाडणी वर्साप्रमाण चड्टो क्रम लायात:

- (A) चंद्रेश्वर स्तोत्र-सुहास यशवंत दलाल
- (B) सडयावेलीं फुलां-बयाभाव
- (C) गोय म्हजें हांसतां-दियोगु मार्कुश फेर्नादिश
- (D) मोगाची दौलत-ब्राझिन्यु सुवारिश
- (E) पांयजणां-बाकीबाब बोरकार

सकल दिल्या पर्यायातलो योग्य पर्याय वेचात.

- (1) (A), (C), (D), (E), (B)
- (2) (B), (E), (A), (C), (D)
- (3) (C), (D), (B), (A), (E)
- (4) (E), (B), (C), (D), (A)

1[Option ID=17925]  
2[Option ID=17926]  
3[Option ID=17927]  
4[Option ID=17928]

Sl. No.133  
QBID:851083

वि. पंडित हाच्या जिवितांतल्या घडणूकांचो वर्साप्रमाण चड्टो क्रम लायात.

- (A) “ल्हारां” कोंकणी कविता झेल्याचें विमोचन
- (B) युनायटेड पोस्टर्स लॉरिएट इंटरनॅशनल हो आंतरराष्ट्रीय पातळीवेलो पुरस्कार
- (C) गोमन्तभारतीतल्यान बरपावळ प्रसिद्ध
- (D) भारत शासनाची ‘पद्मश्री’ पदवी फाव जाली
- (E) गोवन कम्युनिटी हे संघटनेची थापणूक

सकल दिल्या पर्यायातलो योग्य पर्याय वेचात

- (1) (E), (C), (A), (B), (D)
- (2) (B), (A), (D), (C), (E)
- (3) (E), (C), (B), (A), (D)
- (4) (C), (A), (E), (D), (B)

1[Option ID=17929]  
2[Option ID=17930]



3[Option ID=17931]  
4[Option ID=17932]

Sl. No.134  
QBID:851084

फाकिवन्त कोंकणी नाटककार पुण्डलीक नारायण नायक हांकां लाबिल्ल्या म्हत्वाच्या पुरस्कारांचो यथोचित कालानुक्रम लायात.

- (1) कोंकणी भाशा मण्डळ (गोंय) साहित्य पुरस्कार, गोंय कला अकादेमी साहित्य पुरस्कार, 'चौरंग' एकांकी झेल्याक साहित्य अकादमी पुरस्कार, 'मर्णकटो' नाटकाक अखिल भारतीय आकाशवाणी नाट्यसर्तीत पुरस्कार, गोमन्त शारदा पुरस्कार
- (2) गोंय कला अकादेमी साहित्य पुरस्कार, 'चौरंग' एकांकी झेल्याक साहित्य अकादमी पुरस्कार, 'मर्णकटो' नाटकाक अखिल भारतीय आकाशवाणी नाट्यसर्तीत पुरस्कार, कोंकणी भाशा मण्डळ (गोंय) साहित्य पुरस्कार, गोमन्त शारदा पुरस्कार
- (3) गोंय कला अकादेमी साहित्य पुरस्कार, 'मर्णकटो' नाटकाक अखिल भारतीय आकाशवाणी नाट्यसर्तीत पुरस्कार, कोंकणी भाशा मण्डळ (गोंय) साहित्य पुरस्कार, गोमन्त शारदा पुरस्कार, 'चौरंग' एकांकी झेल्याक साहित्य अकादमी पुरस्कार
- (4) 'चौरंग' एकांकी झेल्याक साहित्य अकादमी पुरस्कार, गोंय कला अकादेमी साहित्य पुरस्कार, 'मर्णकटो' नाटकाक अखिल भारतीय आकाशवाणी नाट्यसर्तीत पुरस्कार, कोंकणी भाशा मण्डळ (गोंय) साहित्य पुरस्कार, गोमन्त शारदा पुरस्कार

1[Option ID=17933]  
2[Option ID=17934]  
3[Option ID=17935]  
4[Option ID=17936]

Sl. No.135  
QBID:851085

“उगडास पटी” ह्या अनंत केळकर हांच्या निबंदातल्यान मेळिल्ल्या तांच्या जिणेतल्या घडणुकांचो क्रम लायात.

- (A) “कालचक्र” ह्या सदराची वितरावणी  
(B) आकाशवाणी वेल्यान पयले खबरापत्र वाचलें.  
(C) आकाशवाणी वेल्यान निवृती  
(D) महाराष्ट्र परिचय केंद्राच्या सेवेत रुजू.  
(E) आकाशवाणी पणजी केंद्राच्या सेवेत रुजू

सकल दिल्या पर्यायातलो योग्य पर्याय वेचात.

- (1) (A), (D), (E), (B), (C)  
(2) (C), (A), (B), (D), (E)  
(3) (D), (E), (B), (A), (C)  
(4) (B), (C), (A), (E), (D)

1[Option ID=17937]  
2[Option ID=17938]  
3[Option ID=17939]  
4[Option ID=17940]

Sl. No.136  
QBID:851086

सकयल दोन विधानां दिल्यात. तांतूतले (A) हें विधान आसा आनी (R) हें विधान ताचें कारण जावन आसा.

- (A) : दवरण्याचें अस्तित्व आनी म्हत्व लोकमानसांतल्यान नश्ट जालां  
(R) : पुरातन संस्कृती फाटीं पडून आयज गतिमान यंत्रयुग आयलां.

सकल दिल्या पर्यायातलो योग्य पर्याय वेचात.

- (1) (A) आनी (R) विधानां बरोबर आसात आनी (R) हें (A) चें बरोबर स्पश्टीकरण आसा.  
(2) (A) आनी (R) विधानां बरोबर आसात पुण (R) हें (A) चें बरोबर स्पश्टीकरण ना.  
(3) विधान (A) बरोबर पुण विधान (R) चूक  
(4) विधान (A) चूक पुण विधान (R) बरोबर

1[Option ID=17941]  
2[Option ID=17942]  
3[Option ID=17943]  
4[Option ID=17944]

Sl. No.137  
QBID:851087

सकयल दोन विधानां दिल्यात. तांतूतलें (A) हें विधान आसा आनी (R) हे विधान ताचें कारण जावन आसा.

(A) : खरेपणान 'करबट' हें नांव ह्या झेल्याक सर्वार्थान सोबता

(R) : करबटांत फकत विचारप्रवर्तक निबंद आसात.

सकल दिल्ल्या पर्यायातलो योग्य पर्याय वेचात.

- (1) (A) आनी (R) दोनूय विधानां बरोबर आसात आनी (R) हें (A) चें बरोबर स्पश्टीकरण आसा.
- (2) (A) आनी (R) दोनूय बरोबर आसात पुण (R) हें (A) चें बरोबर स्पश्टीकरण ना.
- (3) विधान (A) बरोबर पुण विधान (R) चूक
- (4) विधान (A) चूक पुण विधान (R) बरोबर

1[Option ID=17945]

2[Option ID=17946]

3[Option ID=17947]

4[Option ID=17948]

Sl. No.138

QBID:851088

सकयल दोन विधानां दिल्यात. तांतूतले (A) हें विधान आसा आनी (R) हें विधान ताचें कारण जावन आसा.

(A) : पोरनो निबंध वा वैचारिक लेख म्हणटात ताचो हेतू स्पश्ट आसतालो

(R) : एकाद्रें मत मांडूंक वा खोडून काडूंक लेखक हातात पेन उखलतालो

सकल दिल्ल्या पर्यायातलो योग्य पर्याय वेचात.

- (1) (A) आनी (R) दोनूय विधानां बरोबर आसात आनी (R) हें (A) चें बरोबर स्पश्टीकरण आसा.
- (2) (A) आनी (R) दोनूय विधानां बरोबर आसात पुण (R) हें (A) चें बरोबर स्पश्टीकरण ना.
- (3) विधान (A) बरोबर पुण विधान (R) चूक
- (4) विधान (A) चूक पुण विधान (R) बरोबर

1[Option ID=17949]

2[Option ID=17950]

3[Option ID=17951]

4[Option ID=17952]

Sl. No.139

QBID:851089

Given below are two statements : One is labelled as Assertion (A) and the other is labelled as Reason (R) :

(A) : सर फिलिप सिडनेच्या इंग्लिश साहित्यशास्त्राच्या विशींची पुराय बरपावळ आशिल्ल्या पुस्तकाक आद्यग्रंथ म्हणटात, कारण

(R) : ताच्या मरणा उपरांत विंगड विंगड प्रकाशकांनी 'द डिफेन्स ऑव्ह पोएसी' तेच परी 'एन अपोलॉजी' अशा दोन माथाळ्यांनी विमोचित केल्ल्या ह्या ग्रंथांत अभिजात ग्रीक, रोमन आनी युरोपीय साहित्यिकांचो परामर्श धेतिल्लो आसा .

सकल दिल्या पर्यायातलो योग्य पर्याय वेचात.

- (1) Both (A) and (R) are true and (R) is the correct explanation of (A)
- (2) Both (A) and (R) are true but (R) is NOT the correct explanation of (A)
- (3) (A) is true but (R) is false
- (4) (A) is false but (R) is true

1[Option ID=17953]

2[Option ID=17954]

3[Option ID=17955]

4[Option ID=17956]

Sl. No.140

QBID:851090

Given below are two statements : One is labelled as Assertion (A) and the other is labelled as Reason (R) :

(A) : आशय सुत्रांच्या (thematology) आनी रूपचिन्हांच्या तुळात्मक अभ्यासा वरवीं साहित्यकांचो पावंडो, ताचे लेखनाचो आवांठ, आनी ताच्या बरपाचो हेर भासांतल्या साहित्यनिर्मणेचेर जाल्लो प्रभाव मतींत येवंक पावता;

(R) : कारण आशय सुत्रां वरवीं साहित्यकाची शैली, मांडणी करपाची पद्दत आनी दृश्टिकोण हांच्या हाताळणींतल्यान ताच्या सर्जनशीलतेचो नकसूदपणान वेध, घेवंक शक्य जाता.

सकल दिल्या पर्यायातलो योग्य पर्याय वेचात.

- (1) Both (A) and (R) are true and (R) is the correct explanation of (A)
- (2) Both (A) and (R) are true but (R) is NOT the correct explanation of (A)
- (3) (A) is true but (R) is false
- (4) (A) is false but (R) is true

1[Option ID=17957]

2[Option ID=17958]

3[Option ID=17959]

4[Option ID=17960]

Sl. No.141

QBID:851091

सकयल दिल्ली कविता वाचून तिचे सकयल दिल्या, प्रस्नांच्यो जापो दियात.

म्हज्या मना-मोगरे कळी  
फुलत जाल्यार फुलतली  
एकसुरीच काळखा-कुशींत  
रात जागयत परमळटली

नखेत्रांचे दुदा-दोळे  
पळीन ल्हवूच भुरकुट्टली  
ताळयेच्या तन्न्या मांडयेर  
वान्यार सुरार धोलतली

संसाराची संगळींच कुटां  
दुखां, व्यथा विसरतली  
निशेंलेल्या धतरेचेर  
सर्ग नवो सोदतली

म्हज्या मना मोगरे कळी  
फुलत जाल्यार फुलतली  
एकसुरीच काळखा-कुशींत  
रात जागयत परमळटली

मोगरे कळी हें किदयाचें प्रतीक आसा ?

- (1) रात
- (2) नखेत्र
- (3) कवीमन
- (4) काळोख

1[Option ID=17961]

2[Option ID=17962]

3[Option ID=17963]

4[Option ID=17964]

Sl. No.142

QBID:851092

सकयल दिल्ली कविता वाचून तिचे सकयल दिल्या, प्रस्नांच्यो जापो दियात.

म्हज्या मना-मोगरे कळी  
फुलत जाल्यार फुलतली  
एकसुरीच काळखा-कुशींत  
रात जागयत परमळटली

नखेत्रांचे दुदा-दोळे  
पळीन ल्हवूच भुरकुट्टली  
ताळयेच्या तन्न्या मांडयेर  
वान्यार सुरार धोलतली

संसाराची संगळींच कुटां  
दुखां, व्यथा विसरतली  
निशेंलेल्या धतरेचेर  
सर्ग नवो सोदतली

म्हज्या मना मोगरे कळी  
फुलत जाल्यार फुलतली  
एकसुरीच काळखा-कुशींत  
रात जागयत परमळटली

'ताळयेच्या तन्न्या मांडयेर' कोण धोलतली ?

- (1) मन
- (2) मोगरेकळी
- (3) फुलां कळी
- (4) मना कळी

1[Option ID=17965]  
2[Option ID=17966]  
3[Option ID=17967]  
4[Option ID=17968]

Sl. No.143  
QBID:851093

सकयल दिल्ली कविता वाचून तिचे सकयल दिल्या, प्रस्नांच्यो जापो दियात.

म्हज्या मना-मोगरे कळी  
फुलत जाल्यार फुलतली  
एकसुरीच काळखा-कुशींत  
रात जागयत परमळटली

नखेत्रांचे दुदा-दोळे  
पळीन ल्हवूच भुरकुट्टली  
ताळयेच्या तन्न्या मांडयेर  
वान्यार सुरार धोलतली

संसाराची संगळींच कुटां  
दुखां, व्यथा विसरतली  
निशेंलेल्या धतरेचेर  
सर्ग नवो सोदतली

म्हज्या मना मोगरे कळी  
फुलत जाल्यार फुलतली  
एकसुरीच काळखा-कुशींत  
रात जागयत परमळटली

वान्यार सुरार धोलप म्हळ्यार -

- (1) एकसुरीच रावप
- (2) निशेंवप
- (3) खोशी जावप
- (4) रात जागोवप

1[Option ID=17969]  
2[Option ID=17970]  
3[Option ID=17971]  
4[Option ID=17972]

Sl. No.144



QBID:851094

सकयल दिल्ली कविता वाचून तिचे सकयल दिल्या, प्रस्नांच्यो जापो दियात.

म्हज्या मना-मोगरे कळी  
फुलत जाल्यार फुलतली  
एकसुरीच काळखा-कुशींत  
रात जागयत परमळटली

नखेत्रांचे दुदा-दोळे  
पळौन ल्हवूच भुरकुट्टली  
ताळयेच्या तन्न्या मांडयेर  
वाच्यार सुरार धोलतली

संसाराची संगळींच कुटां  
दुखां, व्यथा विसरतली  
निशिलेल्या धर्तरेचेर  
सर्ग नवो सोदतली

म्हज्या मना मोगरे कळी  
फुलत जाल्यार फुलतली  
एकसुरीच काळखा-कुशींत  
रात जागयत परमळटली

कळी खंय परमळटली ?

- (1) धर्तरेचेर
- (2) सर्गांत
- (3) वाच्यार
- (4) काळखांत

1[Option ID=17973]

2[Option ID=17974]

3[Option ID=17975]

4[Option ID=17976]

Sl. No.145

QBID:851095

सकयल दिल्ली कविता वाचून तिचे सकयल दिल्या, प्रस्नांच्यो जापो दियात.

म्हज्या मना-मोगरे कळी  
फुलत जाल्यार फुलतली  
एकसुरीच काळखा-कुशींत  
रात जागयत परमळटली

नखेत्रांचे दुदा-दोळे  
पळौन ल्हवूच भुरकुट्टली  
ताळयेच्या तन्न्या मांडयेर  
वाच्यार सुरार धोलतली

संसाराची संगळींच कुटां  
दुखां, व्यथा विसरतली  
निशिलेल्या धर्तरेचेर  
सर्ग नवो सोदतली

म्हज्या मना मोगरे कळी  
फुलत जाल्यार फुलतली  
एकसुरीच काळखा-कुशींत  
रात जागयत परमळटली

हे कवितेंतल्यान कवी ताच्या मनाची कसली अवतीकाय सांगूक सोदता ?

- (1) निशेणी
- (2) दुखेस्त
- (3) एकसुरेपण
- (4) खोशी

1[Option ID=17977]

2[Option ID=17978]

3[Option ID=17979]  
4[Option ID=17980]

Sl. No.146  
QBID:851096

सकयल दिल्ली गद्यांश नकसूदपणान वाचात आनी ताचे पोन्दा दिल्ल्या प्रस्नांची अर्थपुराय उत्तरां वेंचून काडात:

कोंकणीन 10व्या शेंकड्याच्या अदमासाक भाशेचें रूप घेतलें, अशें चडशा विद्वानांचें म्हणणें. कोंकणी भाशेचे विद्वान्य आनी वस्तुनिष्ठ संशोधक दोतोर सुमित्र मंगेश कत्रे, रावसाहेब दो. व्हि. पी. चव्हाण, दो.सु.बा कुलकर्णी हांणीय तशा अर्थाचें अभ्यासपुराय ग्रंथलेखन केलां-रूप घेवपाची ही घडणूक म्हळ्यार कोंकणीची उत्पत्ती अशें म्हणूंक जाय. कोंकणी भाशेच्या अस्तित्वा पासत जाय आशिल्लें आंदोलन अशें म्हणप समा न्हय. 16व्या शेंकड्याच्या मध्यावर्धांत कृष्णदास शामा हांच्यो रामायण तेच परी महाभारत ह्या महाकाव्यांतलो गद्यांत रचिल्लयो कथा त्याच समाया बरोवन जाल्यो हे रचणुके फाटल्यान तांच्यो प्रेरणा कितें आशिल्ल्यो म्हणपाची कारणां आजूनय स्पश्टतायेन उमजनात. घडये गोंयचे आस्मितायेच्या कारणाक लागून कोंकणीची उदरगत करपाची आत्मगत प्रेरणा आसूं येता.

परन्त 16व्या शेंकड्यांत गोंयांत राज्यशकट चलोवंक आयिल्ल्या (खरेपणीं आफोवन हाडिल्ल्या) किरिस्तांव धर्मप्रसारकांच्यो प्रेरणा सुस्पश्ट आशिल्ल्यो तांका तांचो धर्म प्रसारित जावंक जाय आशिल्लो, आनी तांकां सत्तेचे बळ लबिल्लें. धर्मप्रसाराचे दिकेन वचपा पासत गोंय प्रांतिक परिशदेच्या, 1567, 1574, 1575, 1492 आनी 1606 ह्या काळांतलीं संमेलनांनी पारित जाल्लीं आज्ञापत्रां आनी अधिनियम मानून घेतिल्लीं शेकी फ्रान्सिस्कन पंथीय क्रिस्ती धर्मप्रसारकांक थकाव्या भासांचें तशें आकर्शण नासल्यारय जेज्वीत पंथीय क्रिस्ती धर्म प्रसारकांच्या 'सोसायटी ऑफ जीझस' हे संस्थेत थळाव्या भासांत बरपावळ करूंक जाय म्हणपाची वेवस्था आशिल्ली. देखून 17व्या शेंकड्यांत हे भाशेच्या अभ्यासाक तेच परी तिच्यातले साहित्याचे रचणुकेक आरंब जालो अशें दिसता. अनुमानान शंबर एक वर्सां हो मोलादीक वावर चल्लो. त्या काळांन कोंकणीत मोटया उत्साहान आनी व्हडा संख्येन व्याकरणां उतरावळी, शब्दकोश, धार्मिक प्रश्नोत्तरी, चरित्रां हांची बरपां जालीं. 27 जून 1684 हो दीस गोंयच्या इतिहासांत म्हत्वाचो थारता, कारण गोंयचो व्हाईसरॉय फ्रान्सिस द ताव्होरान कोंकणी भास उलोवपाची, बरोवपाची, वाचपाची मान्यताय काडून घेतली. उपरान्त ते बरपावळेच्या निर्मणेक खंड पडलो तो पडलो. सामान्य समश्टीतय तितली उर्बा नाशिल्ली आनी राजकी तेच परी धार्मिक पर्यावरण अशें आशिल्लें की कोंकणीची कास धरपा इतली उमळशिकेची निर्मणी जावंक पावली ना. कोंकणीचें आंदोलन 17व्या शेंकड्यांत जावंक पावलें ना, कारण आपणाले भाशेविशी उत्तान जावंचें अशी: परिस्थिती नाशिल्ली ह्या आंदोलनाच्या मुळासांत गोंयचे आस्मितायेचो आनी आस्तित्वाचे समस्येची बसका आसूंक जाय आशिल्ली.

गोंयांत पुर्तुगाली शासकांचो प्रतिनिधि म्हूण प्रमुख सचिव पदाचेर वावर करपी ज्योर्की इलियोदोर द कुन्य रिव्हार 1855त गोंयांत आयलो ताणें एक पक्षी प्रशासन सांबाळ्ळें आनी हेर वटेन कोंकणीच्या उद्वाराचेय व्रत घेतलें. 1858 त ताणें कोंकणी विशीं इतिहासिक निबंद बरोवन एक व्हडलें इतिहासिक कार्यच केलें. अशें म्हणूं येता. कोंकणी निबंद बरोवपापासत, ताणे कोंकणी भाशेचो, तितूंत आशिल्ल्या भरघोस साहित्याचो संशोधन पुराय नियाळ घेतलो. गोंय प्रांतिक परिशदेची 1567, 1575, 1585, 1592 आनी 1606 ह्या काळांतल्या संमेलनांनी जीं आज्ञापत्रां आनी अधिनियम मानून घेतिल्ले तांचें आस्तित्त्व तशें अंधूक जावंक नाशिल्लें. अशे फाटभुंयेर मोंसियोर रिव्हारान साबार कोंकणीक मायभास मानतल्यांक उलो मारुन म्हळें, कोंकणीची व्हडविक उमजून घेयात. तिका पिडापीड कोणे, तेच परी कशे तरेन केली, तिचे संबंदान इतिहास नियाळात संस्कृतीक, सामाजीक, शिक्षणीक आनी दीसपट्टे जिणेचे मळांनी तिचें उपयोजन करूंक लजू नाकात.

कोंकणी भाशेचें आन्दोलन म्हळ्यार कितें?

- (1) कोंकणी भाशेची उत्पत्ती कशी जाली ह्या संबंदातलें संशोधन.
- (2) कोंकणी भाशेन स्वतंत्र रूप घेवंचें म्हूण करपाची बरपावळ
- (3) कोंकणी भाशेंत बरपावळ करपा फाटल्यान प्रेरणा कितें, हें सोदून काडपा पासत केल्ली कार्यावळ
- (4) कोंकणी समश्टीच्या संस्कृतीक, समाजीक, शिक्षणीक अस्तित्वा पासत केल्ली प्रखर आंदोलनां

1[Option ID=17981]  
2[Option ID=17982]  
3[Option ID=17983]  
4[Option ID=17984]

Sl. No.147  
QBID:851097

सकयल दिल्ली गद्यांश नकसूदपणान वाचात आनी ताचे पोन्दा दिल्ल्या प्रस्नांची अर्थपुराय उत्तरां वेंचून काडात:

कोंकणीन 10व्या शेंकड्याच्या अदमासाक भाशेचें रूप घेतलें, अशें चडशा विद्वानांचें म्हणणें. कोंकणी भाशेचे विद्वान्य आनी वस्तुनिष्ठ संशोधक दोतोर सुमित्र मंगेश कत्रे, रावसाहेब दो. वि. पी. चव्हाण, दो.सु.बा कुलकर्णी हांणीय तशा अर्थाचें अभ्यासपुराय ग्रंथलेखन केलां-रूप घेवपाची ही घडणूक म्हळ्यार कोंकणीची उत्पत्ती अशें म्हणूंक जाय. कोंकणी भाशेच्या अस्तित्वा पासत जाय आशिल्लें आंदोलन अशें म्हणप समा न्हय. 16व्या शेंकड्याच्या मध्यावर्धांत कृष्णदास शामा हांच्यो रामायण तेच परी महाभारत ह्या महाकाव्यांतलो गद्यांत रचिल्लयो कथा त्याच समाया बरोवन जाल्यो हे रचणुके फाटल्यान तांच्यो प्रेरणा कितें आशिल्ल्यो म्हणपाची कारणां आजूय स्पश्टतायेन उमजनात. घडये गोंयचे आस्मितायेच्या कारणाक लागून कोंकणीची उदरगत करपाची आत्मगत प्रेरणा आसूं येता.

परन्त 16व्या शेंकड्यांत गोंयांत राज्यशकट चलोवंक आयिल्ल्या (खरेपणीं आफोवन हाडिल्ल्या) किरिस्तांव धर्मप्रसारकांच्यो प्रेरणा सुस्पश्ट आशिल्ल्यो तांका तांचो धर्म प्रसारित जावंक जाय आशिल्लो, आनी तांकां सत्तेचे बळ लबिल्लें. धर्मप्रसाराचे दिकेन वचपा पासत गोंय प्रांतिक परिशदेच्या, 1567, 1574, 1575, 1492 आनी 1606 ह्या काळातलीं संमेलनांनी पारित जाल्लीं आज्ञापत्रां आनी अधिनियम मानून घेतिल्लीं शेकी फ्रान्सिस्कन पंथीय क्रिस्ती धर्मप्रसारकांक थकाव्या भासांचें तशें आकर्शण नासल्यारय जेज्वीत पंथीय क्रिस्ती धर्म प्रसारकांच्या 'सोसायटी ऑफ जीझस' हे संस्थेत थळाव्या भासांत बरपावळ करूंक जाय म्हणपाची वेवस्था आशिल्ली. देखून 17व्या शेंकड्यांत हे भाशेच्या अभ्यासाक तेच परी तिच्यातले साहित्याचे रचणुकेक आरंभ जालो अशें दिसता. अनुमानान शंबर एक वर्सां हो मोलादीक वावर चल्लो. त्या काळांन कोंकणीत मोट्या उत्साहान आनी व्हडा संख्येन व्याकरणां उतरावळी, शब्दकोश, धार्मिक प्रश्नोत्तरी, चरित्रां हांची बरपां जालीं. 27 जून 1684 हो दीस गोंयच्या इतिहासांत म्हत्वाचो थारता, कारण गोंयचो व्हाईसरॉय फ्रान्सिस द ताव्होरान कोंकणी भास उलोवपाची, बरोवपाची, वाचपाची मान्यताय काडून घेतली. उपरान्त ते बरपावळेच्या निर्मणेक खंड पडलो तो पडलो. सामान्य समश्टीतय तितली उर्बा नाशिल्ली आनी राजकी तेच परी धर्मिक पर्यावरण अशें आशिल्लें की कोंकणीची कास धरपा इतली उमळशिकेची निर्मणी जावंक पावली ना. कोंकणीचें आंदोलन 17व्या शेंकड्यांत जावंक पावलें ना, कारण आपणाले भाशेविशीं उत्तान जावंचें अशी: परिस्थिती नाशिल्ली ह्या आंदोलनाच्या मुळासांत गोंयचे आस्मितायेचो आनी आस्तित्वाचे समस्येची बसका आसूंक जाय आशिल्ली.

गोंयांत पुर्तुगाली शासकांचो प्रतिनिधि म्हूण प्रमुख सचिव पदाचेर वावर करपी ज्योर्की इलियोदोर द कुन्य रिव्हार 1855त गोंयांत आयलो ताणें एक पक्षी प्रशासन सांबाळ्ळें आनी हरे वटेन कोंकणीच्या उद्वाराचेय व्रत घेतलें. 1858 त ताणें कोंकणी विशीं इतिहासिक निबंद बरोवन एक व्हडलें इतिहासिक कार्यच केलें. अशें म्हणूं येता. कोंकणी निबंद बरोवपापासत, ताणे कोंकणी भाशेचो, तितूंत आशिल्ल्या भरघोस साहित्याचो संशोधन पुराय नियाळ घेतलो. गोंय प्रांतिक परिशदेची 1567, 1575, 1585, 1592 आनी 1606 ह्या काळांतल्या संमेलनांनी जीं आज्ञापत्रां आनी अधिनियम मानून घेतिल्ले तांचें आस्तित्त्व तशें अंधूक जावंक नाशिल्लें. अशे फाटभुंयेर मोंसियोर रिव्हारान साबार कोंकणीक मायभास मानतल्यांक उलो मारुन म्हळें, कोंकणीची व्हडविक उमजून घेयात. तिका पिडापीड कोणे, तेच परी कशे तरेन केली, तिचे संबंदान इतिहास नियाळात संस्कृतीक, सामाजीक, शिक्षणीक आनी दीसपट्टे जिणेचे मळांनी तिचें उपयोजन करूंक लजू नाकात.

दो. सुमित्र मंगेश कत्रे आनी रावसाहेब दो. वि. पी. चव्हाण हांणी कोंकणी पासत कितें केलें?

- (1) दो.सु.मं. कत्रेन 'फार्मेशन ऑफ कोंकणी' आनी रावसाहेब चव्हाणान द कोंकण अँड द कोंकणी लँग्वेज' हीं पुस्तकां बरयलीं
- (2) दो.सु.बा. कुलकर्णीच्या कोंकणी विशीच्या संशोधनाचें दायज चलयलें
- (3) कृष्णदास शामा हांका कोंकणीविशीची उत्पत्ती सोदूंक प्रेरणा दिली
- (4) किरिस्तांव धर्मप्रसारकांच्यो प्रेरणा सुस्पश्ट केल्यो

1[Option ID=17985]  
2[Option ID=17986]  
3[Option ID=17987]  
4[Option ID=17988]

Sl. No.148  
QBID:851098



सकयल दिल्ली गद्यांश नकसूदपणान वाचात आनी ताचे पोन्दा दिल्ल्या प्रस्नांची अर्थपुराय उत्तरां वेंचून काडात:

कोंकणीन 10व्या शेंकड्याच्या अदमासाक भाशेचें रूप घेतलें, अशें चडशा विद्वानांचें म्हणणें. कोंकणी भाशेचे विद्वान्य आनी वस्तुनिष्ठ संशोधक दोतोर सुमित्र मंगेश कत्रे, रावसाहेब दो. व्हि. पी. चव्हाण, दो.सु.बा कुलकर्णी हांणीय तशा अर्थाचें अभ्यासपुराय ग्रंथलेखन केलां-रूप घेवपाची ही घडणूक म्हळ्यार कोंकणीची उत्पत्ती अशें म्हणूंक जाय. कोंकणी भाशेच्या अस्तित्वा पासत जाय आशिल्लें आंदोलन अशें म्हणप समा न्हय. 16व्या शेंकड्याच्या मध्यावर्धांत कृष्णदास शामा हांच्यो रामायण तेच परी महाभारत ह्या महाकाव्यांतलो गद्यांत रचिल्लयो कथा त्याच समाया बरोवन जाल्यो हे रचणुके फाटल्यान तांच्यो प्रेरणा कितें आशिल्ल्यो म्हणपाची कारणां आजूय स्पश्टतायेन उमजनात. घडये गोंयचे आस्मितायेच्या कारणाक लागून कोंकणीची उदरगत करपाची आत्मगत प्रेरणा आसूं येता.

परन्त 16व्या शेंकड्यांत गोंयांत राज्यशकट चलोवंक आयिल्ल्या (खरेपणीं आफोवन हाडिल्ल्या) क्रिस्तांव धर्मप्रसारकांच्यो प्रेरणा सुस्पश्ट आशिल्ल्यो तांका तांचो धर्म प्रसारित जावंक जाय आशिल्लो, आनी तांकां सत्तेचे बळ लाबिल्लें. धर्मप्रसाराचे दिकेन वचपा पासत गोंय प्रांतिक परिशदेच्या, 1567, 1574, 1575, 1492 आनी 1606 ह्या काळांतलीं संमेलनांनी पारित जाल्लीं आज्ञापत्रां आनी अधिनियम मानून घेतिल्लीं शेकी फ्रान्सिस्कन पंथीय क्रिस्ती धर्मप्रसारकांक थकाव्या भासांचें तशें आकर्शण नासल्यारय जेज्वीत पंथीय क्रिस्ती धर्म प्रसारकांच्या 'सोसायटी ऑफ जीझस' हे संस्थेत थळाव्या भासांत बरपावळ करूंक जाय म्हणपाची वेवस्था आशिल्ली. देखून 17व्या शेंकड्यांत हे भाशेच्या अभ्यासाक तेच परी तिच्यातले साहित्याचे रचणुकेक आरंब जालो अशें दिसता. अनुमानान शंबर एक वर्सां हो मोलादीक वावर चल्लो. त्या काळांन कोंकणीत मोटया उत्साहान आनी व्हडा संख्येन व्याकरणां उतरावळी, शब्दकोश, धार्मिक प्रश्नोत्तरी, चरित्रां हांची बरपां जालीं. 27 जून 1684 हो दीस गोंयच्या इतिहासांत म्हत्वाचो थारता, कारण गोंयचो व्हाईसरॉय फ्रान्सिस द ताव्होरान कोंकणी भास उलोवपाची, बरोवपाची, वाचपाची मान्यताय काडून घेतली. उपरान्त ते बरपावळेच्या निर्मणेक खंड पडलो तो पडलो. सामान्य समश्टीतय तितली उर्बा नाशिल्ली आनी राजकी तेच परी धार्मिक पर्यावरण अशें आशिल्लें की कोंकणीची कास धरपा इतली उमळशिकेची निर्माणी जावंक पावली ना. कोंकणीचें आंदोलन 17व्या शेंकड्यांत जावंक पावलें ना, कारण आपणाले भाशेविशी उत्तान जावंचें अशी: परिस्थिती नाशिल्ली ह्या आंदोलनाच्या मुळसांत गोंयचे आस्मितायेचो आनी आस्तित्वाचे समस्येची बसका आसूंक जाय आशिल्ली.

गोंयांत पुर्तुगाली शासकांचो प्रतिनिधि म्हूण प्रमुख सचिव पदाचेर वावर करपी ज्योर्की इलियोदोर द कुन्य रिव्हार 1855त गोंयांत आयलो ताणें एक पक्षी प्रशासन सांबाळ्ळें आनी हरे वटेन कोंकणीच्या उद्वाराचेय व्रत घेतलें. 1858 त ताणें कोंकणी विशीं इतिहासिक निबंद बरोवन एक व्हडलें इतिहासिक कार्यच केलें. अशें म्हणूं येता. कोंकणी निबंद बरोवपापासत, ताणे कोंकणी भाशेचो, तितूंत आशिल्ल्या भरघोस साहित्याचो संशोधन पुराय नियाळ घेतलो. गोंय प्रांतिक परिशदेची 1567, 1575, 1585, 1592 आनी 1606 ह्या काळांतल्या संमेलनांनी जीं आज्ञापत्रां आनी अधिनियम मानून घेतिल्ले तांचें आस्तित्त्व तशें अंधूक जावंक नाशिल्लें. अशे फाटभुंयेर मोंसियोर रिव्हारान साबार कोंकणीक मायभास मानतल्यांक उलो मारुन म्हळें, कोंकणीची व्हडविक उमजून घेयात. तिका पिडापीड कोणे, तेच परी कशे तरेन केली, तिचे संबंदान इतिहास नियाळात संस्कृतीक, सामाजीक, शिक्षणीक आनी दीसपट्टे जिणेचे मळांनी तिचें उपयोजन करूंक लजू नाकात.

सतराव्या शेंकड्यांत गोंयातलें कोंकणीत जोज्वितांनी व्याकरणां, उतरावळी, शब्दकोश, धार्मिक प्रश्नोत्तरी, चरित्रां हांची बरपां केलीं कारण-

- (1) तांकां स्वयंसफूर्त जाल्ली
- (2) गोंय प्रांतिक परिशदेची आज्ञापत्रां आनी अधिनियम हांचे वरवीं तांका तशें करचें पडलें
- (3) तांका तांचे संस्थेन तशें करपाची वेवस्था करुन दवरिल्ली
- (4) अनुमानान 100 एक वर्सां हो मोलादीक वावर करुंक संद लाबली

1[Option ID=17989]  
2[Option ID=17990]  
3[Option ID=17991]  
4[Option ID=17992]

Sl. No.149  
QBID:851099



सकयल दिल्ली गद्यांश नकसूदपणान वाचात आनी ताचे पोन्दा दिल्ल्या प्रस्नांची अर्थपुराय उत्तरां वेंचून काडात:

कोंकणीन 10व्या शेंकड्याच्या अदमासाक भाशेचें रूप घेतलें, अशें चडशा विद्वानांचें म्हणणें. कोंकणी भाशेचे विद्वान्य आनी वस्तुनिष्ठ संशोधक दोतोर सुमित्र मंगेश कत्रे, रावसाहेब दो. व्ही. पी. चव्हाण, दो.सु.बा कुलकर्णी हांणीय तशा अर्थाचें अभ्यासपुराय ग्रंथलेखन केलां-रूप घेवपाची ही घडणूक म्हळ्यार कोंकणीची उत्पत्ती अशें म्हणूंक जाय. कोंकणी भाशेच्या अस्तित्वा पासत जाय आशिल्लें आंदोलन अशें म्हणप समा न्हय. 16व्या शेंकड्याच्या मध्यावर्धांत कृष्णदास शामा हांच्यो रामायण तेच परी महाभारत ह्या महाकाव्यांतलो गद्यांत रचिल्लयो कथा त्याच समायाय बरोवन जाल्यो हे रचणुके फाटल्यान तांच्यो प्रेरणा कितें आशिल्ल्यो म्हणपाची कारणां आजूनय स्पश्टतायेन उमजनात. घडये गोंयचे आस्मितायेच्या कारणाक लागून कोंकणीची उदरगत करपाची आत्मगत प्रेरणा आसूं येता.

परन्त 16व्या शेंकड्यांत गोंयांत राज्यशकट चलोवंक आयिल्ल्या (खरेपणीं आफोवन हाडिल्ल्या) किरिस्तांव धर्मप्रसारकांच्यो प्रेरणा सुस्पश्ट आशिल्ल्यो तांका तांचो धर्म प्रसारित जावंक जाय आशिल्लो, आनी तांकां सत्तेचे बळ लबिल्लें. धर्मप्रसाराचे दिकेन वचपा पासत गोंय प्रांतिक परिशदेच्या, 1567, 1574, 1575, 1492 आनी 1606 ह्या काळांतलीं संमेलनांनी पारित जाल्लीं आज्ञापत्रां आनी अधिनियम मानून घेतिल्लीं शेकी फ्रान्सिस्कन पंथीय क्रिस्ती धर्मप्रसारकांक थकाव्या भासांचें तशें आकर्शण नासल्यारय जेज्वीत पंथीय क्रिस्ती धर्म प्रसारकांच्या 'सोसायटी ऑफ जीझस' हे संस्थेत थळाव्या भासांत बरपावळ करूंक जाय म्हणपाची वेवस्था आशिल्ली. देखून 17व्या शेंकड्यांत हे भाशेच्या अभ्यासाक तेच परी तिच्यातले साहित्याचे रचणुकेक आरंब जालो अशें दिसता. अनुमानान शंबर एक वर्सां हो मोलादीक वावर चल्लो. त्या काळांन कोंकणीत मोटया उत्साहान आनी व्हडा संख्येन व्याकरणां उतरावळी, शब्दकोश, धार्मिक प्रश्नोत्तरी, चरित्रां हांची बरपां जालीं. 27 जून 1684 हो दीस गोंयच्या इतिहासांत म्हत्वाचो थारता, कारण गोंयचो व्हाईसरॉय फ्रान्सिस द ताव्होरान कोंकणी भास उलोवपाची, बरोवपाची, वाचपाची मान्यताय काडून घेतली. उपरान्त ते बरपावळेच्या निर्मणेक खंड पडलो तो पडलो. सामान्य समश्टीतय तितली उर्बा नाशिल्ली आनी राजकी तेच परी धर्मिक पर्यावरण अशें आशिल्लें की कोंकणीची कास धरपा इतली उमळशिकेची निर्मणी जावंक पावली ना. कोंकणीचें आंदोलन 17व्या शेंकड्यांत जावंक पावलें ना, कारण आपणाले भाशेविशी उत्तान जावंचें अशी: परिस्थिती नाशिल्ली ह्या आंदोलनाच्या मुळसांत गोंयचे आस्मितायेचो आनी आस्मित्वाचे समस्येची बसका आसूंक जाय आशिल्ली.

गोंयांत पुर्तुगाली शासकांचो प्रतिनिधि म्हूण प्रमुख सचिव पदाचेर वावर करपी ज्योकीं इलियोदोर द कुन्य रिव्हार 1855त गोंयांत आयलो ताणें एक पक्षी प्रशासन सांबाळ्ळें आनी हेर वटेन कोंकणीच्या उद्वाराचेय व्रत घेतलें. 1858 त ताणें कोंकणी विशीं इतिहासिक निबंद बरोवन एक व्हडलें इतिहासिक कार्यच केलें. अशें म्हणूं येता. कोंकणी निबंद बरोवपापासत, ताणे कोंकणी भाशेचो, तितूंत आशिल्ल्या भरघोस साहित्याचो संशोधन पुराय नियाळ घेतलो. गोंय प्रांतिक परिशदेची 1567, 1575, 1585, 1592 आनी 1606 ह्या काळांतल्या संमेलनांनी जीं आज्ञापत्रां आनी अधिनियम मानून घेतिल्ले तांचें आस्मित्च तशें अंधूक जावंक नाशिल्लें. अशे फाटभुंयेर मोंसियोर रिव्हारान साबार कोंकणीक मायभास मानतल्यांक उलो मारुन म्हळें, कोंकणीची व्हडविक उमजून घेयात. तिका पिडापीड कोणे, तेच परी कशे तरेन केली, तिचे संबंदान इतिहास नियाळात संस्कृतीक, सामाजीक, शिक्षणीक आनी दीसपट्टे जिणेचे मळांनी तिचें उपयोजन करूंक लजू नाकात.

ज्योकीं इलियादोर द कुन्य रिव्हार हाणें फुडारांत गोंयकारांक लाब जावंक जाय म्हूण कितें केलें?

- (1) ताणें एक पक्षी प्रशासन सांबाळ्ळें आनी हेर वटेन कोंकणीच्या उद्वाराचेय व्रत घेतलें
- (2) ताणें 'कोंकणी विशींचें इतिहासिक निबंद' बरोवन एक व्हडलें इतिहासिक कार्यच केलें
- (3) कोंकणीची व्हडविक उमजून घेयात तिका पिडापीड, कोणे, तेच परी कशे तरेन केली तिचे संबंदान इतिहास नियाळात अशें सांगलें
- (4) ताणें कोंकणी भाशेचो तितूंत आशिल्ल्या भरघोस साहित्याचो संशोधनपुराय नियाळ घेतलो

1[Option ID=17993]  
2[Option ID=17994]  
3[Option ID=17995]  
4[Option ID=17996]

Sl. No.150  
QBID:851100

सकयल दिल्ली गद्यांश नकसूदपणान वाचात आनी ताचे पोन्दा दिल्ल्या प्रस्नांची अर्थपुराय उत्तरां वेंचून काडात:

कोंकणीन 10व्या शेंकड्याच्या अदमासाक भाशेचें रूप घेतलें, अशें चडशा विद्वानांचें म्हणणें. कोंकणी भाशेचे विद्वान्य आनी वस्तुनिष्ठ संशोधक दोतोर सुमित्र मंगेश कत्रे, रावसाहेब दो. व्हि. पी. चव्हाण, दो.सु.बा कुलकर्णी हांणीय तशा अर्थाचें अभ्यासपुराय ग्रंथलेखन केलां-रूप घेवपाची ही घडणूक म्हळ्यार कोंकणीची उत्पत्ती अशें म्हणूंक जाय. कोंकणी भाशेच्या अस्तित्वा पासत जाय आशिल्लें आंदोलन अशें म्हणप समा न्हय. 16व्या शेंकड्याच्या मध्यावर्धांत कृष्णदास शामा हांच्यो रामायण तेच परी महाभारत ह्या महाकाव्यांतलो गद्यांत रचिल्लयो कथा त्याच समाया बरोवन जाल्यो हे रचणुके फाटल्यान तांच्यो प्रेरणा कितें आशिल्ल्यो म्हणपाची कारणां आजूनय स्पश्टतायेन उमजनात. घडये गोंयचे आस्मितायेच्या कारणाक लागून कोंकणीची उदरगत करपाची आत्मगत प्रेरणा आसूं येता.

परन्त 16व्या शेंकड्यांत गोंयांत राज्यशकट चलोवंक आयिल्ल्या (खरेपणीं आफोवन हाडिल्ल्या) क्रिस्तांव धर्मप्रसारकांच्यो प्रेरणा सुस्पश्ट आशिल्ल्यो तांका तांचो धर्म प्रसारित जावंक जाय आशिल्लो, आनी तांकां सत्तेचे बळ लबिल्लें. धर्मप्रसाराचे दिक्केन वचपा पासत गोंय प्रांतिक परिशदेच्या, 1567, 1574, 1575, 1492 आनी 1606 ह्या काळांतलीं सामेलनांनी पारित जाल्लीं आज्ञापत्रां आनी अधिनियम मानून घेतिल्लीं शेकी फ्रान्सिस्कन पंथीय क्रिस्ती धर्मप्रसारकांक थकाव्या भासांचें तशें आकर्शण नासल्यारय जेज्वीत पंथीय क्रिस्ती धर्म प्रसारकांच्या 'सोसायटी ऑफ जीझस' हे संस्थेत थळाव्या भासांत बरपावळ करूंक जाय म्हणपाची वेवस्था आशिल्ली. देखून 17व्या शेंकड्यांत हे भाशेच्या अभ्यासाक तेच परी तिच्यातले साहित्याचे रचणुकेक आरंब जालो अशें दिसता. अनुमानान शंबर एक वर्सां हो मोलादीक वावर चल्लो. त्या काळांन कोंकणीत मोटया उत्साहान आनी व्हडा संख्येन व्याकरणां उतरावळी, शब्दकोश, धार्मिक प्रश्नोत्तरी, चरित्रां हांची बरपां जालीं. 27 जून 1684 हो दीस गोंयच्या इतिहासांत म्हत्वाचो थारता, कारण गोंयचो व्हाईसरॉय फ्रान्सिस द ताव्होरान कोंकणी भास उलोवपाची, बरोवपाची, वाचपाची मान्यताय काडून घेतली. उपरान्त ते बरपावळेच्या निर्मणेक खंड पडलो तो पडलो. सामान्य समश्टीतय तितली उर्बा नाशिल्ली आनी राजकी तेच परी धार्मिक पर्यावरण अशें आशिल्लें की कोंकणीची कास धरपा इतली उमळशिकेची निर्मणी जावंक पावली ना. कोंकणीचें आंदोलन 17व्या शेंकड्यांत जावंक पावलें ना, कारण आपणाले भाशेविशी उत्तान जावंचें अशी: परिस्थिती नाशिल्ली ह्या आंदोलनाच्या मुळासांत गोंयचे आस्मितायेचो आनी आस्तित्वाचे समस्येची बसका आसूंक जाय आशिल्ली.

गोंयांत पुर्तुगाली शासकांचो प्रतिनिधि म्हूण प्रमुख सचिव पदाचेर वावर करपी ज्योर्की इलियोदोर द कुन्य रिव्हार 1855त गोंयांत आयलो ताणें एक पक्षी प्रशासन सांबाळ्ळें आनी हेर वटेन कोंकणीच्या उद्वाराचेय व्रत घेतलें. 1858 त ताणें कोंकणी विशीं इतिहासिक निबंद बरोवन एक व्हडलें इतिहासिक कार्यच केलें. अशें म्हणूं येता. कोंकणी निबंद बरोवपापासत, ताणे कोंकणी भाशेचो, तितूंत आशिल्ल्या भरघोस साहित्याचो संशोधन पुराय नियाळ घेतलो. गोंय प्रांतिक परिशदेची 1567, 1575, 1585, 1592 आनी 1606 ह्या काळांतल्या संमेलनांनी जीं आज्ञापत्रां आनी अधिनियम मानून घेतिल्ले तांचें आस्तिच तशें अंधूक जावंक नाशिल्लें. अशे फाटभुंयेर मोंसियोर रिव्हारान साबार कोंकणीक मायभास मानतल्यांक उलो मारून म्हळें, कोंकणीची व्हडविक उमजून घेयात. तिका पिडापीड कोणे, तेच परी कशे तरेन केली, तिचे संबंदान इतिहास नियाळात संस्कृतीक, सामाजीक, शिक्षणीक आनी दीसपट्टे जिणेचे मळांनी तिचें उपयोजन करूंक लजू नाकात.

ह्या परिच्छेदाक तुमी खंयचो माथाळो वेंचून काडटले?

- (1) कोंकणीच्या आंदोलनाचें आदी-पर्व
- (2) कोंकणीचे उदरगतींत विद्वानांचो पालव
- (3) कोंकणीच्या आंदोलनाच्या काळांतलें आदी पर्व
- (4) कोंकणी भास: स्वत्त्व आनी द्वंद्व

1[Option ID=17997]  
2[Option ID=17998]  
3[Option ID=17999]  
4[Option ID=18000]